জন জন কী বাত জন জন তক

সাপ্তাহিক

जन जन विचार

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ সাপ্তাহিক জন জন বিচাৰ

VOICE OF ALL, FOR ALL WEEKLY JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 11 September 2026 :: Year-1 Vol-35 Issue-14 :: शुक्रवार । 11 सितंबर 2026 । शक संवत 1948 । भाद्रपद । कृष्ण । अमावस्या । :: पृष्ठ-20 । मूल्य - 15 रुपए

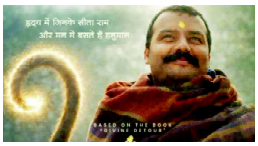

जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

छात्रों की मजबूरी का कारोबार

दिल्ली की एक छात्र बस्ती में हुआ हादसा केवल एक इमारत या एक इलाके की कहानी नहीं है। यह उस व्यवस्था का आईना है, जिसमें देश के हजारों युवा बेहतर भविष्य की तलाश में अपने घरों से निकलते हैं और बदले में उन्हें मिलता है- महंगा किराया, तंग कमरे, असुरक्षित इमारतें और अंतहीन प्रतिस्पर्धा।

हमने शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक बदलाव की सबसे बड़ी सीढ़ी माना था। लेकिन आज उस सीढ़ी तक पहुंचना ही हजारों युवाओं के लिए संघर्ष बन गया है। प्रवेश परीक्षाओं से लेकर सरकारी नौकरियों तक अवसर सीमित हैं और दावेदार लाखों। इस प्रतिस्पर्धा के बीच छात्रों की मजबूरी के इर्द-गिर्द एक पूरा कारोबार खड़ा शेष पृष्ठ 2 पर

तीन महाशक्तियों का मिलन

मोदी-पुतिन-शी एक फ्रेम में, ब्रिक्स मंच से बदले वैश्विक समीकरणों का संदेश

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली 12 सितंबर को उस ऐतिहासिक क्षण की गवाह बनने जा रही है, जब भारत, रूस और चीन के शीर्ष नेता एक ही मंच पर साथ नजर आएंगे। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के रात्रिभोज में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात पर पूरी दुनिया की निगाहें टिकी हैं। सात वर्ष बाद भारत आ रहे शी जिनपिंग और रूस-यूक्रेन युद्ध तथा पश्चिम एशिया के तनाव के बीच दिल्ली पहुंच रहे पुतिन की मौजूदगी इस बैठक को कूटनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण बना रही है।

तीनों नेताओं की एक साथ तस्वीर महज एक फोटो अवसर नहीं होगी, बल्कि बदलती विश्व व्यवस्था का बड़ा राजनीतिक संदेश भी मानी जा रही है। पिछले वर्षों में जब भी मोदी, पुतिन और शी एक साथ किसी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर दिखाई दिए हैं, उनकी गर्मजोशी भरी मुलाकात ने पश्चिमी देशों में व्यापक चर्चा पैदा की है।

एक तस्वीर, कई संदेश

तीनों नेताओं के बीच संबंधों का स्वरूप अलग-अलग है और भारत, रूस तथा चीन के अपने-अपने हित हैं। इसके बावजूद ब्रिक्स और एससीओ जैसे मंचों पर इनकी मौजूदगी यह संकेत देती है कि वैश्विक राजनीति अब केवल पश्चिमी शक्तियों के इर्द-गिर्द सीमित नहीं है। पिछले वर्ष चीन के तियानजिन में एससीओ सम्मेलन के दौरान मोदी, पुतिन और शी की साथ में तस्वीरों ने अमेरिकी और यूरोपीय मीडिया शेष पृष्ठ 3 पर

भारत के पास 190 परमाणु हथियार

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली/वाशिंगटन

अमेरिकी रिपोर्ट

जमीन, हवा और समुद्र तीनों मोर्चों पर बढ़ रही रणनीतिक क्षमता

भारत अपनी परमाणु प्रतिरोधक क्षमता को लगातार आधुनिक और मजबूत कर रहा है। अमेरिकी फेडरेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट्स (एफएएस) के अनुमान के अनुसार भारत के पास करीब 190 परमाणु हथियार हो सकते हैं। इनमें लगभग 160 हथियार ऐसे लांचरों से जुड़े बताए गए हैं, जिन्हें जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल किया जा सकता है, जबकि करीब 30 अतिरिक्त वारहेड नई मिसाइल प्रणालियों के लिए तैयार किए जा रहे हैं।

एफएएस की रिपोर्ट सार्वजनिक सूचनाओं, सरकारी आंकड़ों और व्यावसायिक उपग्रह तस्वीरों के आधार पर तैयार अनुमान पर आधारित है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत परमाणु हथियार ले जाने वाले विमानों, जमीन आधारित मिसाइलों और समुद्र से परमाणु हमला करने में सक्षम प्रणालियों को लगातार विकसित और आधुनिक बना रहा है।

तीनों मोर्चों पर रणनीतिक तैयारी

भारत की परमाणु क्षमता अब केवल जमीन आधारित मिसाइलों तक सीमित नहीं है। हवा, जमीन और समुद्र-तीनों माध्यमों से परमाणु हथियार पहुंचाने की क्षमता को मजबूत किया जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार समुद्र आधारित परमाणु क्षमता किसी देश की प्रतिरोधक शक्ति को अधिक विश्वसनीय बनाती है। समुद्र में तैनात प्रणालियां संभावित प्रथम हमले के बाद भी जवाबी क्षमता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

730 किलो हथियार-ग्रेड प्लूटोनियम का अनुमान

रिपोर्ट में इंटरनेशनल पैनल ऑन फिसाइल मैटेरियल्स के अनुमान का भी उल्लेख है। इसके मुताबिक 2026 की शुरुआत तक भारत के पास लगभग 730 किलोग्राम हथियार-ग्रेड प्लूटोनियम हो सकता है। हालांकि इस अनुमान में करीब 170 किलोग्राम तक की अनिश्चितता भी बताई गई है। एफएएस का अनुमान है कि भारत ने 140 से 225 परमाणु हथियारों के लिए पर्याप्त सैन्य प्लूटोनियम तैयार किया हो सकता है। यह गणना प्रति वारहेड औसतन करीब चार किलोग्राम प्लूटोनियम की अनुमानित आवश्यकता पर आधारित है।

परमाणु हथियारों की वास्तविक संख्या और उनकी तैनाती से जुड़ी जानकारी भारत सार्वजनिक नहीं करता। ऐसे में एफएएस का 190 हथियारों का आंकड़ा आधिकारिक भारतीय आंकड़ा नहीं, बल्कि स्वतंत्र अनुमान है।

रिपोर्ट में भी इसकी सीमाएं स्वीकार की शेष पृष्ठ 7 पर

सात साल बाद जिनपिंग व मोदी की अहम मुलाकात

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारत-चीन संबंधों में लंबे तनाव के बाद एक बार फिर कूटनीतिक संवाद का बड़ा अवसर सामने आया है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग सात साल बाद भारत पहुंच रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग के बीच 12 सितंबर को नई दिल्ली में अहम द्विपक्षीय बैठक होने की संभावना है। यह मुलाकात ऐसे समय हो रही है जब दोनों देशों के रिश्ते धीरे-धीरे सामान्य होने की दिशा में बढ़ रहे हैं, लेकिन सीमा विवाद और बढ़ता व्यापार घाटा अब भी बड़ी चुनौतियां बने हुए हैं।

चीन के विदेश मंत्रालय ने आधिकारिक रूप से बताया कि प्रधानमंत्री मोदी के निमंत्रण पर राष्ट्रपति शी जिनपिंग 12 और 13 सितंबर को भारत में होने वाले 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। शी इससे पहले वर्ष 2019 में मामल्लापुरम में प्रधानमंत्री मोदी से मिले थे। इसके कुछ ही महीनों बाद पूर्वी लद्दाख में सीमा पर तनाव ने दोनों देशों के रिश्तों को गंभीर रूप से प्रभावित किया था।

सीमा और व्यापार पर होगी सीधी बात : प्रधानमंत्री मोदी और शी जिनपिंग की प्रस्तावित बैठक में सीमा विवाद, द्विपक्षीय व्यापार, व्यापार असंतुलन और आर्थिक सहयोग प्रमुख मुद्दे रह शेष पृष्ठ 7 पर

भूपेन दा की विरासत को सहेजने की पहल

असम सरकार खरीदेगी महान संगीतकार का स्मृतिधन्य आवास

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

असम के महान गायक, संगीतकार और सांस्कृतिक दूत डॉ. भूपेन हजारिका की स्मृतियों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए असम सरकार ने महत्वपूर्ण पहल शुरू की है। सरकार कोलकाता के टालीगंज स्थित उस ऐतिहासिक आवास को खरीदकर संरक्षित करना चाहती है, जहां हजारिका ने अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय बिताया और अनेक कालजयी गीतों एवं धुनों को जन्म दिया।

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने इस संबंध में बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी को पत्र लिखकर सहयोग का अनुरोध किया है। असम सरकार का उद्देश्य इस तीन मंजिला मकान को खरीदकर स्मृति एवं सांस्कृतिक विरासत केंद्र के रूप में विकसित करना है।

कालजयी रचनाओं का साक्षी रहा घर

टालीगंज के 77-बी, गोल्फ क्लब रोड स्थित इस मकान से भूपेन हजारिका का गहरा संबंध रहा। 1950 के दशक की शुरुआत में असम से कोलकाता आने के बाद वे लंबे समय तक यहां किराये पर रहे। वर्ष 1981 में उन्होंने यह मकान खरीद लिया था।

यही वह स्थान था जहां उन्होंने कई अमर गीतों और संगीत रचनाओं को आकार दिया। इसलिए यह मकान केवल एक इमारत नहीं, बल्कि भारतीय संगीत और असम की सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी महत्वपूर्ण धरोहर माना जाता है।

स्मारक के रूप में संरक्षित करने की योजना

असम सरकार का एक प्रतिनिधिमंडल पहले ही कोलकाता पहुंचकर मकान का निरीक्षण कर चुका है। अब इसके स्वामित्व, खरीद और संरक्षण से जुड़ी कानूनी तथा प्रशासनिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की तैयारी है। भूपेन हजारिका की जन्मशताब्दी के अवसर पर सरकार इस आवास को विरासत स्थल के रूप में विकसित करना चाहती है। प्रस्तावित केंद्र में उनके जीवन, संगीत, साहित्य और सामाजिक योगदान से जुड़ी स्मृतियों को संजोने की योजना है।

भूपेन हजारिका केवल असम के महान कलाकार नहीं थे; उन्होंने अपने संगीत के माध्यम से मानवता, सामाजिक समानता और सांस्कृतिक एकता का संदेश पूरे देश तक पहुंचाया। ऐसे में उनके कोलकाता स्थित आवास को संरक्षित करने की पहल उनकी अमूल्य सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

यह घर अब केवल भूपेन हजारिका की स्मृतियों का ठिकाना नहीं रहेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए उनके संगीत और विचारों की जीवंत पाठशाला बनने की उम्मीद है।

'आजू' के 13वें द्विवार्षिक अधिवेशन की तैयारी

जन जन विचार
...✍ बिश्वनाथ चारिआली

अखिल असम पत्रकार संघ (आजू) का केंद्रीय द्विवार्षिक अधिवेशन आगामी दिसंबर महीने में बिश्वनाथ में आयोजित किया जाएगा। इसके मद्देनजर बिश्वनाथ जिला पत्रकार संघ की पहल पर बिश्वनाथ चारिआली नगर पालिका कार्यालय के सभागार में एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गई। बिश्वनाथ में आयोजित होने वाले इस अधिवेशन को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए बैठक में एक मजबूत स्वागत समिति का गठन किया गया। समिति गठन से पूर्व बैठक के उद्देश्य की व्याख्या जिला समिति के सचिव रतन भुइयां ने की। अध्यक्षता बिश्वनाथ जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष निरंजन हजारिका ने की। 'आजू' की केंद्रीय समिति के अधिवेशन के संबंध में चर्चा की शुरुआत अध्यक्ष निरंजन हजारिका ने की। इसके पश्चात

अखिल असम पत्रकार संघ के अध्यक्ष पंकज कुमार नाथ ने विस्तृत विचार व्यक्त किए। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान बिश्वनाथ के इतिहास, विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों, इतिहास-समृद्ध धरोहरों, मठ-मंदिरों, प्राकृतिक परिवेश तथा सुंदरता आदि पर प्रकाश डाला। अधिवेशन की रूपरेखा के संबंध में 'आजू' के सचिव नकुल तालुकदार ने प्रासंगिक वक्तव्य रखा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, 'आगामी 13वां द्विवार्षिक अधिवेशन हर तरह से भव्य और सफल होगा, क्योंकि इसी बिश्वनाथ में अखिल असम पत्रकार संघ का जन्म हुआ था। जन्मस्थान पर आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय जनता से आशा के अनुरूप सहयोग प्राप्त होगा।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

छात्रों की मजबूरी का कारोबार

हो गया है। सवाल सिर्फ यह नहीं कि इमारत में सुरक्षा नियमों का पालन हुआ या नहीं। असली सवाल यह है कि ऐसी इमारतों और ऐसी जिंदगी की जरूरत ही क्यों पैदा हुई? जिस युवा को देश का भविष्य कहा जाता है, उसे रहने के लिए सुरक्षित कमरा तक न मिले तो यह केवल प्रशासन की विफलता नहीं, समाज की सामूहिक विफलता है। जब मुनाफा इंसानी सुरक्षा से बड़ा हो जाए और सफलता के रास्ते इतने संकरे कर दिए जाएं कि लाखों युवा एक ही दरवाजे पर सिर पटकें, तो दोष केवल किसी एक व्यक्ति का नहीं रह जाता।

'सत्य निकेतन' हमें चेतावनी दे रहा है-युवाओं को सिर्फ परीक्षा की तैयारी मत कराइए, उन्हें सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन का रास्ता भी दीजिए।

वरना कल कोई और 'सत्य निकेतन' हमारी व्यवस्था का एक और कड़वा सच सामने ला देगा।

राशिफल

11 से 17 सितंबर, 2026।। विक्रम संवत 2083-**मास** : भाद्रपद, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** : अमावस्या

मेष : यह सप्ताह कामकाज में गति लेकर आएगा। नए अवसर मिल सकते हैं और व्यापार में लाभ के संकेत हैं। रिश्तों में अहंकार से बचें। अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण रखें। सप्ताह के अंत में कार्यक्षेत्र में सफलता मिल सकती है।

वृषभ : रुके हुए काम आगे बढ़ेंगे और आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है। नौकरी में प्रशंसा या नई जिम्मेदारी मिलने के योग हैं। परिवार में सुख-शांति रहेगी। निवेश में जल्दबाजी न करें।

मिथुन : करियर और कारोबार के लिए सप्ताह अनुकूल रहेगा। अचानक आर्थिक लाभ की संभावना है। घर-परिवार से जुड़ा कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ सकता है। सप्ताह के अंत में यात्रा लाभदायक हो सकती है।

कर्क : आर्थिक मामलों में सुधार के संकेत हैं। भाई-बहनों और करीबी लोगों का सहयोग मिलेगा। कार्यस्थल पर आपकी मेहनत की सराहना हो सकती है। भावनात्मक निर्णय लेने से बचें और स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही न करें।

सिंह : संपर्क और सामाजिक गतिविधियों से लाभ मिलेगा। नए लोगों से जुड़ना भविष्य में उपयोगी साबित हो सकता है। नौकरी में अवसर मिलेंगे, लेकिन खर्च बढ़ने की संभावना है। दांपत्य जीवन में संवाद बनाए रखें।

कन्या : सप्ताह आपके लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहेगा। काम में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं और मान-सम्मान बढ़ेगा। 17 सितंबर के बाद सूर्य के राशि परिवर्तन से आत्मविश्वास और कार्यक्षेत्र में प्रभाव बढ़ने के संकेत हैं।

तुला : आर्थिक मामलों में राहत मिल सकती है। पुराने विवाद सुलझाने का अवसर मिलेगा। दांपत्य जीवन में मधुरता बढ़ेगी। निवेश में लाभ के संकेत हैं, लेकिन बिना पूरी जानकारी के निर्णय न लें।

वृश्चिक : आय बढ़ाने के नए अवसर मिल सकते हैं। लंबे समय से अटका काम पूरा होने की संभावना है। वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा। सप्ताह के अंत में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि मिल सकती है।

धनु : नौकरी और कारोबार में प्रगति के योग हैं। प्रशासनिक या सरकारी काम में सफलता मिल सकती है। पुराने प्रयासों का लाभ मिलेगा। परिवार के साथ समय बिताने से मानसिक संतुलन बेहतर रहेगा।

मकर : भाग्य का साथ मिलेगा। शिक्षा, प्रतियोगिता और यात्रा से जुड़े मामलों में सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। परिवार में कोई शुभ कार्य हो सकता है। जल्दबाजी में बड़ा फैसला लेने से बचें।

कुंभ : लंबे समय से अटके काम पूरे होने की संभावना है। नौकरी में पदोन्नति या नई जिम्मेदारी के संकेत हैं। कारोबार में नए अवसर मिल सकते हैं। साझेदारी में पारदर्शिता बनाए रखें।

मीन : रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रेम और पारिवारिक संबंधों में मधुरता बढ़ सकती है। खर्च बढ़ने की संभावना है, इसलिए बजट पर ध्यान दें। स्वास्थ्य और दिनचर्या को प्राथमिकता देना आपके लिए लाभकारी रहेगा।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

11 सितंबर (शुक्रवार) : स्नान-दान अमावस्या
13 सितंबर (रविवार) : श्रीमंत शंकरदेव तिथि
14 सितंबर (सोमवार) : हरितालिका व्रत (तीज)
17 सितंबर (गुरुवार) : श्री सूर्यषष्ठी व्रत

भाग्योदय
●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

धन दिशा

डिजिटल जमाने का डाकू

पिछले महीने सीबीआई ने पूरे देश में 80 से ज्यादा जगहों पर छापे मारे - सिर्फ उन लोगों को पकड़ने के लिए जो फोन और इंटरनेट के जरिए आम लोगों के खाते खाली कर रहे थे। यह कोई दूर की खबर नहीं है। 'डिजिटल अरेस्ट', 'केवाईसी अपडेट', 'बैंक खाता बंद होने वाला है' - इन जुमलों से आपके आसपास के लोग भी ठगे जा चुके हैं। इस हफ्ते इसी से बचने की बात।

एक बात पहले समझ लें - साइबर ठग बहुत पढ़े-लिखे और चालाक होते हैं। वे डर, जल्दबाजी और भरोसे का फायदा उठाते हैं। इसलिए यह सोचना कि 'मैं नहीं फंसूंगा' -खुद को खतरे में डालना है।

'डिजिटल अरेस्ट' क्या होता है? आपको फोन आता है - सीबीआई, ईडी, पुलिस या कस्टम का अधिकारी बनकर। कहते हैं आपके नाम पर अवैध पार्सल पकड़ा गया, या खाते में संदिग्ध लेनदेन मिला। घबराहट में आप उनके जाल में फंस जाते हैं और 'केस रफा-दफा' करने के नाम पर लाखों रुपए ट्रांसफर कर देते हैं। यह पूरी तरह फर्जी होता है। सरकारी एजेंसी कभी वीडियो कॉल पर 'गिरफ्तारी' नहीं करती।

केवाईसी और ओटीपी का जाल : 'आपका खाता बंद हो जाएगा, अभी ओटीपी बताइए' - यह सुनते ही फोन रखें। बैंक कभी ओटीपी नहीं मांगता। कोई भी ओटीपी, पासवर्ड या सीवीवी किसी को न बताएं - चाहे सामने वाला खुद को बैंक अधिकारी क्यों न कहे।

'स्क्रीन शेयर' से बचें - कोई अनजान ऐप डाउनलोड करने या अपनी स्क्रीन शेयर करने को कहे, तो तुरंत मना कर दें। इससे ठग आपके फोन का पूरा नियंत्रण ले सकते हैं और बैंकिंग ऐप से पैसे उड़ा सकते हैं।

पैसे गए तो क्या करें? घबराएं नहीं — तुरंत 1930 (राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन) पर कॉल करें और cybercrime.gov.in पर शिकायत दर्ज करें। जितनी जल्दी शिकायत, उतना पैसा वापस मिलने का मौका। बैंक को भी तुरंत सूचित करें।

याद रखें, डर में लिया गया कोई भी वित्तीय फैसला गलत होता है। फोन पर कोई दबाव डाले, जल्दी करने को कहे - तो रुकिए, परिवार के किसी सदस्य को बताइए, और तभी आगे बढ़िए। थोड़ी देर की सावधानी, लाखों की बचत।

अगले हफ्ते : रिटायरमेंट की तैयारी - 30 की उम्र में सोचेंगे तो 60 में आराम मिलेगा

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए

-कोमल जैन

पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

असम में आलू की खेती को मिलेगा बड़ा बाजार

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

पांच हजार किसानों तक पहुंचेगा पेप्सिको का नेटवर्क

बाजार की चिंता नहीं, किसानों को बस बढ़ानी होगी पैदावार : हिमंत

असम को देश के प्रमुख आलू उत्पादक क्षेत्रों में बदलने की दिशा में बड़ा कदम उठाया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि राज्य के किसानों के लिए बाजार सुनिश्चित है और अब जरूरत उत्पादन तथा उत्पादकता बढ़ाने की है। 'पेप्सिको इंडिया' असम में चिप्स बनाने योग्य आलू की खरीद का दायरा तेजी से बढ़ाने की तैयारी में है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि कंपनी किसानों को चिप्स-ग्रेड आलू के बीज उपलब्ध कराएगी और तैयार उपज की खरीद भी सुनिश्चित करेगी। शुरुआत में करीब 30 हजार मीट्रिक टन आलू की खरीद का लक्ष्य है, जिसे आगे 70 हजार मीट्रिक टन तक बढ़ाया जा सकता है। इससे शुरुआती चरण में करीब 5 हजार किसानों को लाभ मिलने की उम्मीद है।

नलबाड़ी के बनेकुची में पेप्सिको के पूर्वोत्तर के पहले विनिर्माण संयंत्र के उद्घाटन के दौरान कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जागृत कोटेचा ने बताया कि इस वर्ष असम से करीब 7 हजार टन आलू खरीदने का लक्ष्य है। 2027 में यह मात्रा 30 हजार टन और अगले तीन से पांच वर्षों में 55-60 हजार टन तक पहुंच सकती है।

कंपनी फिलहाल करीब 600 किसानों के साथ काम कर रही है। बनेकुची संयंत्र में लगभग 700 लोग कार्यरत हैं, जिनमें करीब 75 प्रतिशत महिलाएं हैं। लगभग 120 महिलाओं को आईटीआई नलबाड़ी में 12 सप्ताह का प्रशिक्षण देकर रोजगार दिया गया है। सरकार और कंपनी का लक्ष्य खेती के साथ स्थानीय उद्यमियों, विक्रेताओं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जोड़कर असम में आलू का व्यापक कारोबारी तंत्र तैयार करना है।

किसानों तक समय पर पहुंचे पानी : पीयूष हजारिका

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम के कृषि एवं सिंचाई मंत्री पीयूष हजारोका ने 10 सितंबर को राज्य में चल रही सिंचाई परियोजनाओं और योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में किसानों की जरूरत और मौसम की स्थिति के अनुसार समय पर सिंचाई का पानी उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया गया। मंत्री ने कृषि एवं सिंचाई विभागों के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए, ताकि किसानों को कृषि मौसम के अनुरूप पर्याप्त पानी मिल सके। उन्होंने अधिक कृषि भूमि को सिंचाई सुविधा के दायरे में लाने और मौजूदा सिंचाई ढांचे को मजबूत करने पर भी जोर दिया।

बैठक में लंबित परियोजनाओं को समय पर पूरा करने तथा जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन पर चर्चा हुई। सरकार का लक्ष्य सिंचाई सुविधाओं को प्रभावी बनाकर कृषि उत्पादकता बढ़ाना और किसानों को खेती के लिए आवश्यक पानी समय पर उपलब्ध कराना है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

तीन महाशक्तियों का मिलन

में खासा ध्यान खींचा था। इस बार तस्वीर और भी महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि मंच भारत का है और मेजबानी प्रधानमंत्री मोदी कर रहे हैं।

अमेरिका-यूरोप की भी नजर

तीनों नेताओं की दिल्ली में संभावित मुलाकात ऐसे समय हो रही है, जब अमेरिका और यूरोप की निगाहें ब्रिक्स के बढ़ते प्रभाव पर हैं। व्यापार, टैरिफ, रूस पर प्रतिबंध, यूक्रेन युद्ध और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला जैसे मुद्दों ने पश्चिम और उभरती शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा को और तीखा किया है। मोदी, पुतिन और शी का एक साथ दिखाई देना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि भारत के अमेरिका और यूरोप के साथ रणनीतिक संबंध लगातार मजबूत हुए हैं, वहीं रूस के साथ भारत की रक्षा और ऊर्जा साझेदारी कायम है और चीन के साथ सीमा विवाद के बावजूद आर्थिक एवं कूटनीतिक संवाद आगे बढ़ रहा है।

भारत की कूटनीति की बड़ी परीक्षा

दिल्ली में होने वाला यह मिलन भारत की रणनीतिक स्वायत्तता की नीति को भी दुनिया के सामने रखेगा। नई दिल्ली एक तरफ अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ अपने संबंध मजबूत कर रही है, तो दूसरी तरफ रूस और चीन के साथ बहुपक्षीय मंचों पर संवाद बनाए हुए है। ब्रिक्स सम्मेलन में वैश्विक दक्षिण की आवाज, व्यापार, आर्थिक सहयोग, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार जैसे मुद्दे भी प्रमुख रह सकते हैं।

शी की भारत यात्रा ने बढ़ाया महत्व

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का सात साल बाद भारत आना इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा आकर्षण है। 2019 में मामल्लापुरम में मोदी और शी की मुलाकात के कुछ महीनों बाद पूर्वी लद्दाख में सीमा तनाव ने दोनों देशों के रिश्तों को गहरे संकट में डाल दिया था। अब दोनों देशों के बीच संवाद धीरे-धीरे बहाल हो रहा है। ऐसे में मोदी और शी की द्विपक्षीय बातचीत तथा उसके बाद पुतिन के साथ तीनों नेताओं की मौजूदगी से यह संकेत मिल सकता है कि एशिया की प्रमुख शक्तियां अपने मतभेदों के बावजूद संवाद और सहयोग के रास्ते खुले रखना चाहती हैं।

दिल्ली से जाएगा बड़ा संदेश

12 सितंबर की शाम ब्रिक्स रात्रिभोज में यदि मोदी, पुतिन और शी एक साथ नजर आते हैं, तो यह तस्वीर दुनिया भर के कूटनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बनना तय है। दिल्ली का यह एक फ्रेम वैश्विक शक्ति संतुलन, भारत की कूटनीतिक भूमिका और ब्रिक्स के बढ़ते प्रभाव-तीनों का प्रतीक बन सकता है।

संपादकीय

बंगाल की थाली

धीरेंद्र शास्त्री की बंगाल यात्रा के दौरान नॉन-वेज भोजन को लेकर की गई अपील ने एक साधारण खानपान के सवाल को संस्कृति, आस्था और राजनीति की बहस में बदल दिया है। सवाल यह नहीं कि कौन मांसाहार करता है और कौन शाकाहार। असली सवाल यह है कि क्या किसी प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान उसकी थाली से तय की जा सकती है?

बंगाल की पहचान बेहद विविध है। यहां मछली-भात जीवनशैली का हिस्सा है, तो वैष्णव और अन्य परंपराओं में शाकाहार की गहरी मान्यता भी है। दुर्गापूजा और शक्ति उपासना की समृद्ध परंपरा है, साथ ही साहित्य, संगीत, कला और सामाजिक विविधता की अपनी मजबूत विरासत भी। इसलिए किसी एक खानपान को पूरे बंगाल की पहचान मान लेना उतना ही गलत है, जितना किसी दूसरे खानपान को बंगाली संस्कृति के विरुद्ध खड़ा करना।

धार्मिक आस्था के आधार पर अपील करना किसी व्यक्ति का अधिकार हो सकता है। लेकिन जब ऐसी अपील पूरे समाज की जीवनशैली और पहचान पर प्रभाव डालने वाली बहस बन जाए, तब सावधानी जरूरी है। बंगाल की राजनीति पहले ही भाषा, संस्कृति और अस्मिता के सवालों से संवेदनशील रही है। ऐसे में भोजन को राजनीतिक पहचान का हथियार बनाना सामाजिक दूरी बढ़ा सकता है। बंगाल की संस्कृति किसी एक थाली में बंद नहीं है। यहां आस्था भी है, स्वतंत्र पसंद भी; परंपरा भी है और विविधता भी।

धार्मिक भावनाओं का सम्मान होना चाहिए, लेकिन नागरिक की भोजन संबंधी स्वतंत्रता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। बहस हो-विचार पर, न कि व्यक्ति की थाली पर। क्योंकि बंगाल की पहचान उसकी विविधता है, किसी एक स्वाद की सत्ता नहीं।

जब रिश्तों में भरोसा ही कत्ल हो जाए

कानपुर के दवा कारोबारी विनीत मिनोचा हत्याकांड ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया है कि अपराध का सबसे भयावह चेहरा आखिर कौन-सा है? बाहर से आने वाला हत्यारा या वह साजिश, जो घर की चारदीवारी के भीतर जन्म ले?

पुलिस के अनुसार, इस मामले में कारोबारी के पूर्व कर्मचारी और उसके साथी को गिरफ्तार किया गया है और बहू शालू को भी साजिश में आरोपी बनाया गया है। जांच में यह भी सामने आया है कि हत्या के समय बहू और उसका पति एक समारोह में मौजूद थे। हालांकि सामने आए मोबाइल वीडियो की स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हुई है और मामले में अदालत का अंतिम निर्णय बाकी है।

अगर जांच में लगाए गए आरोप सही साबित होते हैं, तो यह केवल एक हत्या नहीं, बल्कि विश्वास की हत्या भी होगी। जिस घर को व्यक्ति अपना सबसे सुरक्षित स्थान समझता है, वहीं यदि उसके खिलाफ साजिश रची जाए तो अपराध की भयावहता कई गुना बढ़ जाती है।

इस घटना का दूसरा चिंताजनक पहलू धन और लालच है। यदि लाखों रुपए के कथित लालच में किसी अपने की हत्या की साजिश रची गई, तो समाज को यह सोचना होगा कि रिश्तों की कीमत आखिर इतनी सस्ती कैसे हो गई?

राजनीतिक फूफा

जन जन विचार
...✍ अजय बोकिल

भारतीय राजनीति में नेताओं का लोगों से पारिवारिक रिश्ता बनाना और जनता द्वारा उन्हें किसी पसंदीदा नाते के साथ संबोधित करना कोई नई बात नहीं है, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल में 'नाराज फूफाजी' के रिश्ते को जिन सियासी रिश्तों के संदर्भ में नए सिरे पारिभाषित किया है, वह सामाजिक रिश्तों की राजनीतिक ब्रांडिंग ज्यादा है।

यह इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि सामाजिक रिश्तों और रिवाजों में 'नाराज फूफा' को मनाने और यथासंभव उसका मान रखने की जिम्मेदारी भी परिवारजनों की ही होती है, जबकि राजनीतिक फूफा को मनाना तो दूर, उसे गरियाते रहना ही सियासत मानी जाती है। कपड़े फाड़ते रहना ही राजनीतिक फूफा की नियति है।

बल्कि यूं कहें कि राजनीतिक फूफा का सतत रूठे रहना ही कई बार प्रतिस्पर्धी पार्टी की सियासी संजीवनी बन जाता है। यह तकरार दरअसल यह सियासी बनाम सामाजिक फूफा की निर्मम और असमाप्त लड़ाई है, जिसमें बेचारी जनता की भूमिका मासूम दर्शक की है और उसका काम इस फूफावाद के मजे लेते रहना है।

भारत में जनता अपने कई प्रिय और प्रभावशाली नेताओं को पारिवारिक रिश्तों से संबोधित और परखती आई है। मसलन महात्मा गांधी अगर 'बाबा' थे तो जवाहरलाल नेहरू बच्चों के 'चाचा' कहलाना पसंद करते थे। आज के जमाने की बात करें तो शिवराजसिंह चौहान 'मामा' हैं तो सुश्री मायावती 'बहनजी' या फिर 'बुआजी' हैं।

अखिलेश यादव 'बबुआ' या भतीजे हैं तो ममता बैनर्जी 'दीदी' कहलाना पसंद करती हैं। देवेंद्र फडणवीस 'देवा भाऊ' कहलाते हैं। वैसे भी अधिकांश युवा नेता उनके समर्थकों के लिए 'भैया' ही होते हैं, भले उनके चेले-चपाटी चापलूसी की खातिर अपने नेता को चने के झाड़ पर चढ़ाते रहें।

उसमें भी नेता अगर मंत्री वगैरह बन जाए तो उसका प्रमोशन 'साहब' के रूप में बिना किसी ऑफिशियल ऑर्डर के हो जाता है। बड़े नेताओ की तो लगभग सभी पत्नियां जगत 'भाभी' स्वयमेव बन ही जाती हैं। दरअसल यह भारतीय मानस है, जो राजनीतिक हायरआर्की में भी कोई न कोई सामाजिक रिश्ता खोज लेता है और उसे तब तक खाद-पानी देता रहता है, जब तक कि संबंधित व्यक्ति की राजनीतिक या सामाजिक उपयोगिता शून्य नहीं हो जाती।

इस मायने में विपक्ष को 'नाराज फूफा' करार देना थोड़ा अलग इसलिए है क्योंकि भारतीय परिवारों में 'फूफा' का रिश्ता करीबी और महत्वपूर्ण होते हुए भी बहुत सम्मान के भाव से नहीं देखा जाता। उत्तर पश्चिमी भारत में फूफा (कहीं फुआ भी) पिता की बहन (बुआ) के पति को कहा जाता है। कुछ राज्यों में बुआ के लिए 'फूफी' भी प्रचलन में है।

लिहाजा 'फूफी' के पति 'फूफा' हुए। वैसे ही कि जैसे मामी के पति मामा या चाची के पति चाचा कहलाते हैं। वैसे 'बुआ' शब्द का 'पुरूषीकरण' न सिर्फ कठिन बल्कि असहज भी होगा। एक शब्द 'बाउजी' हो सकता है, लेकिन परंपरागत रूप से यह हमारे यहां पिता के लिए इस्तेमाल होता रहा है, जो अब लगभग चलन से बाहर है। 'मम्मी-पापा' संस्कृति ने उसे शब्दकोश से बाहर कर दिया है।

तो फिर 'फूफा' शब्द आया कहां से? इसके मूल में जाएं तो जानकारी मिलती है कि इसकी उत्पत्ति प्राकृत भाषा के शब्द 'फुप्फु' से हुई है। इसीका स्त्रीलिंगी रूप 'फुप्फी' है। हालांकि संस्कृत में इस रिश्ते का नाम 'पितृस्वसृपति' है। जो बोलने में काफी कठिन है। संस्कृत में बुआ को 'पितृस्वसा' कहा जाता है, 'बुआ' शब्द संभवत: इसी का अपभ्रंश है। 'स्वसा' का अर्थ बहन या भगिनी है। हमारे लिए गर्व की बात यह है कि इतने सारे पारिवारिक रिश्ते और उनके अलग-अलग संबोधन और पहचान केवल भारतीय परंपरा में ही है। अन्य संस्कृतियों और सभ्यताओ में सगे रिश्तों को छोड़ दे तो चचेरे-ममेरे या फुफेरे रिश्तों की न तो खास अहमियत है और न ही उनके अलग-अलग नामकरण हैं। वहां बाकी सब 'इन लॉ' होते हैं।

लेकिन 'फूफा' शब्द से एक करीबी रिश्ता ही प्रतिध्वनित नहीं होता, उसके साथ नाराजी और जबरिया ध्यानाकर्षण के आग्रह का भाव भी स्वत: नत्थी है। इसीलिए कुछ लोग फूफा को 'रिटायर्ड जीजा' भी कहते हैं। वो शख्स जो यह हकीकत स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, उसके 'अच्छे दिन' (जैसे कि शादी के समय थे) अब नहीं रहे।

शादी-ब्याह जैसे बड़े पारिवारिक आयोजनो में भी उसका रूतबा पहले की माफिक नहीं रहा। कहा तो यहां तक जाता है कि मांगलिक अवसर पर भी जो मुंह फुलाकर न बैठे, वह फूफा ही क्या? हर बात में कमियां ढूंढ़ना मानो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। फूफाओ के इस मनोविज्ञान और आख्यान को कुछ लोग 'फूफा पुराण' भी कहते हैं।

बहरहाल राजनीतिक फूफा की बात करें तो प्रधानमंत्री मोदी ने पहली बार नाराज फूफा (उनकी अपनी पार्टी में भी कुछ नाराज फूफा हैं) का जिक्र वडोदरा में आयोजित 'नमो फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम में पहली बार किया। इसके पहले वह विपक्ष पर 'दिमागी नक्सल' कहकर प्रहार कर चुके थे। लेकिन बाद में शायद उन्हें लगा कि नाराज और आलोचक विपक्ष के लिए कुछ ऐसा शब्द खोजा जाए, जिसका अर्थ और भाव साधारण आदमी भी बिना दिमाग पर जोर डाले समझ सके। क्योंकि दिमागी नक्सल को बूझने में तो फिर भी दिमाग खपाना पड़ता था।

वडोदरा के बाद पीएम ने दिल्ली विवि के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के आयोजन में भी 'नाराज फूफा' का खासतौर पर जिक्र किया। उन्होंने विपक्ष, खासकर कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि समाज में 'कुछ' लोग ऐसे होते हैं, जो हर नए विकास कार्य या उपलब्धि पर हमेशा असंतुष्ट रहते हैं और बिला वजह उसका विरोध करते हुए पूछते हैं कि इसकी क्या जरूरत थी? पीएम मोदी ने वडोदरा में मालगाड़ियों (फ्रेट कॉरिडोर) और डबल-स्टैक कंटेनर के जरिए एक बार में सैकड़ों ट्रकों के बराबर माल ढोने का उदाहरण देते हुए कहा कि अब ये 'नाराज फूफाजी' चिल्लाएंगे कि जब रेल कॉरिडोर बन गया तो रोड पर चलने वाले ट्रक चालकों और मालिकों का क्या होगा? यानी किसी भी फायदे में किसी का नुकसान तो निहित है। इससे तिलमिलाई कांग्रेस ने पलटवार किया कि मोदी सरकार अपनी नाकामियों और जनविरोधी नीतियों को छिपाने के लिए ऐसे नए-नए शब्दों और विशेषणों (जैसे 'नाराज फूफा', 'दिमागी नक्सल') का इस्तेमाल करती है।

माना यह भी जा रहा है कि प्रधानमंत्री जेन जी से कनेक्ट होने के लिए लिए नए शब्द उपयोग में ला रहे हैं। फूफाओं की आम छवि एक ऐसे रिश्तेदार की है, जो हर बात में टांग अड़ाता है और स्वभाव से चिड़चिड़ा होता है। लेकिन यहां फर्क यह है कि जेन जी के शब्दकोश में फूफा जैसे शब्दों की कोई जगह नहीं है। सगे रिश्तों के अलावा आम तौर पर उसके लिए सभी 'अंकल' ही हैं। लिहाजा भारतीय संस्कृति के पारिवारिक रिश्तों की डिक्शनरी पर 'अंकल-आंटी' ही बुरी तरह से हावी हो चुके हैं। 'अंकल' शब्द की सुविधा यह है कि उसमें पिता के अलावा कोई भी रिश्ता खोजा या फिट किया जा सकता है। वही हाल हाल 'आंटी' का भी है। एकल परिवार संस्कृति का यह सबसे बड़ा नुकसान है।

खैर, प्रधानमंत्री ने अब 'राजनीतिक फूफा बनाम पारिवारिक फूफा' का एक नया नरेटिव उछाला है। विपक्षी दल भी खुद को राजनीतिक फूफा की श्रेणी में ही मान रहे हैं। लेकिन इसमें खतरा यह है कि अगर पारिवारिक मामलों में भी फूफा की यही परिभाषा अप्लाई की जाने लगे तो रिश्तों और रिवाजों को कायम रखने में बहुत मुश्किल होगी।

नई बाइक पर निकले तीन दोस्तों की मौत

भागलपुर। भागलपुर में हाल ही में बस की टक्कर से एक बाइक पर सवार तीन दोस्तों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान आशुतोष कुमार (18), अंशु और सावन के रूप में हुई है। अंशु की मौके पर, जबकि सावन और आशुतोष की अस्पताल में मौत हुई। परिजनों का आरोप है कि घायलों को समय पर बेहतर इलाज नहीं मिला, जिससे दो की जान नहीं बच सकी। हादसे के बाद बस चालक फरार हो गया। पुलिस ने बस और बाइक जब्त कर जांच शुरू कर दी है।

तेजस्वी ने सरकार पर साधा निशाना

गयाजी। टिकारी में भुइयां-मुसहर संघ सम्मेलन को संबोधित करते हुए नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि बिहार के युवाओं को रोजगार और बेहतर भविष्य चाहिए, लेकिन सरकार छात्रों की समस्याओं पर ध्यान देने के बजाय दमन की नीति अपना रही है। तेजस्वी ने अपनी पिछली सरकार के कार्यकाल में युवाओं को रोजगार देने का दावा किया और गरीब, पिछड़े तथा वंचित वर्गों के अधिकारों की बात कही। उन्होंने लालू प्रसाद यादव के सामाजिक न्याय से जुड़े कार्यों का भी उल्लेख किया। उन्होंने राज्य सरकार पर भ्रष्टाचार बढ़ने का आरोप लगाते हुए लोगों से शिक्षित और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की अपील की।

महिला की पीट-पीटकर हत्या

रोहतास। डेहरी के लालगंज मोहल्ले में रुपए के विवाद को लेकर 52 वर्षीय प्रमिला देवी की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटना में उनके दो बेटे भी घायल हुए हैं। परिजनों का आरोप है कि पहले आरोपियों ने बेटे मुकेश से शराब के लिए रुपए मांगे और विरोध करने पर उसके साथ मारपीट कर नहर में धकेल दिया। बाद में कई लोग घर पहुंचे और लाठी-डंडों से हमला कर दिया, जिसमें प्रमिला देवी की मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

पेंशनधारियों के खाते में 54.04 करोड़ रुपए

मुजफ्फरपुर। सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारियों के लिए राज्य सरकार ने बड़ी सौगात दी है। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान मुजफ्फरपुर जिले के 4,55,871 लाभार्थियों के बैंक खातों में अगस्त माह की कुल 54 करोड़ 4 लाख 22 हजार 300 रुपए की बढ़ी हुई पेंशन राशि हस्तांतरित की गई। पेंशन राशि में वृद्धि और खाते में राशि पहुंचने से वृद्धजन, विधवा, दिव्यांग एवं अन्य जरूरतमंद लाभार्थियों में खुशी का माहौल है। राज्य सरकार ने इस अवसर को 'पेंशन उत्सव' के रूप में मनाया। समाहरणालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में जिलाधिकारी कुमार गौरव समेत वरीय अधिकारी और बड़ी संख्या में पेंशनधारी मौजूद रहे। जिलाधिकारी ने लाभार्थियों के मंगलमय जीवन की कामना करते हुए समय पर जीवन प्रमाणीकरण (लाइफ सर्टिफिकेट) कराने की अपील की।

नवादा में 'प्रांतीय मातृशक्ति अभ्यास वर्ग'

नवादा। विश्व हिंदू परिषद, दक्षिण बिहार के तत्वावधान में पिछले दिनों साहू भवन में 'प्रांतीय मातृशक्ति अभ्यास वर्ग' का शुभारंभ हुआ। दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रज्ञा माहाला दीदी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर 'भारत निर्माण में महिलाओं की भूमिका' विषय पर मार्गदर्शन देते हुए प्रज्ञा माहाला दीदी ने भारतीय संस्कृति और इतिहास में महिलाओं के योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि सशक्त और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। कार्यक्रम में दक्षिण बिहार के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुईं।

आईआरसीटीसी मामला : लालू व तेजस्वी समेत 9 पर आरोप तय

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

आईआरसीटीसी होटल टेंडर से जुड़े कथित धनशोधन मामले में लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव समेत नौ आरोपियों के खिलाफ आरोप तय कर दिए गए हैं। दिल्ली की राउज एवेन्यू अदालत के इस फैसले के साथ ही मामले में मुकदमे की कार्यवाही आगे बढ़ने का रास्ता साफ हो गया है। अदालत ने इसी मामले में सात आरोपियों को बरी कर दिया।

प्रवर्तन निदेशालय ने इस मामले में कुल 16 आरोपियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया था। अब अगली सुनवाई 3 अक्टूबर को होगी।

रांची और पुरी के होटलों के ठेके से शुरू हुआ मामला

यह पूरा मामला उस समय का है, जब लालू प्रसाद यादव केंद्र में रेल मंत्री थे। जांच एजेंसियों के अनुसार, रेलवे से जुड़े रांची और पुरी के बीएनआर होटलों के संचालन और रखरखाव का ठेका निजी कंपनी सुजाता होटल्स को देने की प्रक्रिया में कथित अनियमितताएं की गईं।

केंद्रीय जांच ब्यूरो का आरोप है कि ठेका देने की प्रक्रिया में नियमों की अनदेखी कर निजी पक्ष को अनुचित लाभ पहुंचाया गया। जांच एजेंसियों के मुताबिक, इसके बदले पटना की एक कीमती जमीन के लेन-देन से जुड़ा कथित लाभ लालू परिवार तक पहुंचा।

होटल टेंडर से जमीन तक पहुंची जांच

जांच एजेंसियों के अनुसार, इस मामले में होटल का ठेका और पटना की जमीन का लेन-देन एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। आरोप है कि पटना की जमीन पहले एक कंपनी के माध्यम से खरीदी गई और बाद में उसका प्रभावी नियंत्रण लालू परिवार से जुड़ी कंपनी लारा प्रोजेक्ट्स तक पहुंचा।

जांच एजेंसियों ने जमीन के वास्तविक मूल्य और कथित लेन-देन में हुए भुगतान के बीच अंतर को भी मामले का अहम हिस्सा बताया है। इसी कथित लेन-देन ने आगे चलकर धनशोधन जांच का आधार बनाया।

2004-05 के दौर की है जड़

मामले की शुरुआत 2004-05 के दौरान हुई बताई जाती है। उस समय रेलवे के दो होटलों के प्रबंधन से संबंधित प्रक्रिया भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) को सौंपी गई थी। इसके बाद होटल संचालन के लिए निविदा प्रक्रिया आगे बढ़ी।

सीबीआई के अनुसार, 2005-06 में निविदा प्रक्रिया में कथित अनियमितताएं कर सुजाता होटल्स को लाभ पहुंचाया गया। हालांकि लालू परिवार इन आरोपों को लगातार खारिज करता रहा है।

2017 में फिर खुला मामला

कई वर्षों बाद जुलाई 2017 में सीबीआई ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की। जांच एजेंसी ने पद के कथित दुरुपयोग, आपराधिक साजिश और होटल निविदा प्रक्रिया में अनियमितता के आरोप लगाए।

इसके बाद अप्रैल 2018 में सीबीआई ने आरोपपत्र दाखिल किया, जिसमें लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव समेत कई लोगों को आरोपी बनाया गया।

सीबीआई की प्राथमिकी के आधार पर प्रवर्तन निदेशालय ने धनशोधन के पहलू से जांच शुरू की और धनशोधन निवारण कानून के तहत कार्रवाई आगे बढ़ाई।

अदालत में अब मुकदमे की अगली कड़ी

मामले में अदालत की ओर से आरोप तय किए जाने के बाद अब आरोपियों को मुकदमे की प्रक्रिया का सामना करना होगा। अदालत में अभियोजन पक्ष अपने साक्ष्य और गवाह पेश करेगा, जबकि बचाव पक्ष को आरोपों का जवाब देने का अवसर मिलेगा।

इस मामले में आरोप तय होना दोष सिद्ध होना नहीं है। अंतिम फैसला मुकदमे के दौरान सामने आने वाले साक्ष्यों और अदालत के निष्कर्ष पर निर्भर करेगा।

लालू परिवार ने आरोपों को बताया राजनीतिक साजिश

लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार ने जांच एजेंसियों के आरोपों को खारिज किया है। उनका कहना है कि उन्हें और उनके परिवार को राजनीतिक उद्देश्य से निशाना बनाया जा रहा है। लालू परिवार ने अदालत के समक्ष भी अपनी बेगुनाही का दावा किया है।

नाले के पानी से शुरू हुआ विवाद चाकूबाजी में युवक की मौत

सहरसा। नवहट्टा थाना क्षेत्र के बालूटोला में गुरुवार रात मामूली विवाद ने खूनी रूप ले लिया। नाले का गंदा पानी फेंकने को लेकर शुरू हुई कहासुनी के बाद चचेरे भाई ने कथित तौर पर 26 वर्षीय नीतीश महतो पर चाकू से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल नीतीश की सहरसा सदर अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। हमले के दौरान बीच-बचाव करने पहुंचे नीतीश की पत्नी नीलम, बड़े भाई शंकर और भाभी चंपा देवी को भी चाकू मारकर घायल कर दिया गया। तीनों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। परिजनों के अनुसार, दोनों परिवारों के बीच पैतृक जमीन को लेकर वर्षों से विवाद चला आ रहा था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामला दर्ज कर लिया है। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

बिहार एनडीए में सब ठीके-ठाक!

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार की सत्ता में एनडीए सरकार भले ही मजबूती का संदेश दे रही हो, लेकिन गठबंधन के भीतर हाल के कुछ घटनाक्रमों ने राजनीतिक हलकों में सवाल खड़े कर दिए हैं। पिछले कुछ सप्ताह में जदयू की सक्रियता, संगठनात्मक गतिविधियों और राजनीतिक दावेदारियों ने यह चर्चा तेज कर दी है कि भाजपा और जदयू के बीच सब कुछ उतना सहज है या नहीं, जितना सार्वजनिक मंचों से दिखाई देता है।

हालांकि, अभी गठबंधन टूटने या किसी बड़े राजनीतिक बदलाव की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। लेकिन जदयू के हालिया कदमों को बिहार की राजनीति में महत्वपूर्ण संकेत के तौर पर जरूर देखा जा रहा है।

पहला संकेत : सभापति पद पर जदयू की दावेदारी

बिहार विधान परिषद के सभापति पद को लेकर जदयू की दावेदारी चर्चा में है। पार्टी को यह महत्वपूर्ण पद मिलने की संभावना को लेकर राजनीतिक हलकों में अटकलें तेज हैं।

यह मांग महज एक पद की मांग नहीं मानी जा रही। विधान परिषद में सभापति का पद राजनीतिक और संसदीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ऐसे में जदयू की दावेदारी को गठबंधन के भीतर अपने राजनीतिक वजन को स्पष्ट करने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

दूसरा संकेत : 12 जिलों में 'नीतीश संवाद'

जदयू ने 12 जिलों में 'नीतीश संवाद' कार्यक्रम शुरू किया है। इसका घोषित उद्देश्य बिहार से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनता और विशेषज्ञों से सीधा संवाद करना है। फिलहाल फरक्का जलसंधि और बिहार के दीर्घकालिक जल हितों को इस अभियान के केंद्र में रखा गया है।

लेकिन राजनीतिक दृष्टि से देखें तो इसका दूसरा संदेश भी है-जदयू अपने संगठन और अपने सबसे बड़े राजनीतिक चेहरे नीतीश कुमार की मौजूदगी को फिर से जनता के बीच मजबूत कर रहा है।

तीसरा संकेत : केंद्र के मुद्दों पर जदयू का अलग तेवर

फरक्का जलसंधि को लेकर जदयू का रुख भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के सामने एक अलग राजनीतिक आवाज के रूप में दिखाई दे रहा है। पार्टी का तर्क है कि बिहार के हितों और भविष्य की जल जरूरतों को केंद्र में रखकर इस मुद्दे पर निर्णय होना चाहिए।

यह मुद्दा यदि आगे भी राजनीतिक रूप से तेज होता है तो गठबंधन के भीतर केंद्र और राज्य के हितों को लेकर मतभेद की गुंजाइश बढ़ सकती है।

चौथा संकेत : जदयू के भीतर भी हलचल

गठबंधन की चर्चा के बीच जदयू के भीतर नेताओं के बीच खींचतान की खबरें भी सामने आई हैं। अनंत सिंह और नीरज कुमार के बीच मतभेद को लेकर पार्टी स्तर पर सुलह की कोशिश हुई है।

यानी चुनौती सिर्फ भाजपा-जदयू संबंधों तक सीमित नहीं है। जदयू को अपने भीतर भी अलग-अलग प्रभावशाली नेताओं और गुटों के बीच संतुलन साधना है।

क्या जदयू 'एकला चलो' की तैयारी कर रही ?

यही बिहार की राजनीति का सबसे बड़ा सवाल है। जदयू की मौजूदा सक्रियता को देखकर कुछ राजनीतिक विश्लेषक इसे भविष्य की स्वतंत्र राजनीतिक जमीन तैयार करने की कोशिश मान रहे हैं। लेकिन अभी इसे गठबंधन से दूरी या अलग होने की ठोस तैयारी कहना जल्दबाजी होगी।

दरअसल, बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार की सबसे बड़ी ताकत यही रही है कि उन्होंने समय-समय पर गठबंधन बदलकर अपनी राजनीतिक उपयोगिता बनाए रखी है। इसलिए उनके दल की हर बड़ी राजनीतिक पहल को भाजपा के साथ संबंधों के संदर्भ में पढ़ा जाना स्वाभाविक है।

फिलहाल एनडीए में दरार का ऐलान नहीं, लेकिन राजनीतिक संकेत जरूर हैं।

सभापति पद की दावेदारी, 12 जिलों में 'नीतीश संवाद', केंद्र के सामने बिहार के मुद्दों पर अलग तेवर और जदयू के भीतर की गतिविधियां-इन चारों को जोड़कर देखें तो इतना साफ है कि जदयू अपनी राजनीतिक जमीन को लेकर सजग है।

अब असली परीक्षा यह होगी कि भाजपा इन संकेतों को किस तरह संभालती है और जदयू आगे अपने राजनीतिक कदम कितनी दूर तक ले जाता है। बिहार की राजनीति में आज सवाल गठबंधन टूटने का नहीं, बल्कि यह है-क्या एनडीए के भीतर शक्ति संतुलन फिर से बदल रहा है?

उर्वरक की कालाबाजारी पर कसेगा शिकंजा

मधुबनी। समाहरणालय सभाकक्ष में उप विकास आयुक्त की अध्यक्षता में जिला स्तरीय उर्वरक निगरानी समिति की बैठक हुई। इसमें उर्वरकों की उपलब्धता, वितरण, निर्धारित मूल्य, भंडारण और गुणवत्ता की समीक्षा की गई। उप विकास आयुक्त ने सीमावर्ती क्षेत्रों में विशेष टीम गठित कर उर्वरक की बिक्री और आवागमन पर लगातार निगरानी रखने तथा अनियमितता मिलने पर छापेमारी और कार्रवाई के निर्देश दिए। जिले के सभी उर्वरक प्रतिष्ठानों के भंडार का भौतिक सत्यापन कर स्टॉक और अभिलेखों का मिलान भी कराया जाएगा। बैठक में जिले की वास्तविक जरूरत के अनुरूप अधिक उर्वरक आवंटन के लिए संबंधित विभाग को पत्र भेजने का निर्णय लिया गया। उर्वरक के नमूनों का शत-प्रतिशत संग्रह कर प्रयोगशाला में जांच कराने का भी निर्देश दिया गया।

किसानों को डीएपी के विकल्प के रूप में फसल और मिट्टी की जरूरत के अनुसार उपयुक्त एनपीके उर्वरकों के संतुलित उपयोग के लिए जागरूक किया जाएगा। साथ ही किसानों से आवश्यकता के अनुसार ही उर्वरक खरीदने और अनावश्यक रूप से अतिरिक्त मात्रा लेने से बचने की अपील की गई। जिला कृषि पदाधिकारी ने बताया कि जिले में उर्वरकों की बिक्री उर्वरक बिक्री आवेदन प्रणाली (एफएसएएस) के माध्यम से की जा रही है। खुदरा विक्रेताओं को 7 से 14 सितंबर तक इस प्रणाली का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

'चिकित्सा आपके द्वार' अभियान का जागरूकता रथ

मधुबनी। गैर-संचारी रोगों की समय पर जांच और उपचार के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से जिले में 'जांच एवं उपचार चिकित्सा आपके द्वार' अभियान शुरू किया गया है। जिलाधिकारी आनंद शर्मा एवं वरीय पुलिस अधीक्षक योगेंद्र कुमार ने 3 सितंबर को समाहरणालय परिसर से जागरूकता रथ (एलईडी वाहन) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रथ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में भ्रमण कर लोगों को अभियान की जानकारी देगा। अभियान 1 सितंबर से 30 नवंबर 2026 तक चलेगा। इस दौरान घर-घर स्क्रीनिंग के साथ स्वास्थ्य जांच, चिकित्सकीय परामर्श, दवा वितरण और आवश्यक उपचार की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

अभियान में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मुंह, स्तन एवं गर्भाशय ग्रीवा कैंसर, हृदय रोग, नॉन-अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज तथा सीओपीडी जैसी बीमारियों की समय पर पहचान और उपचार पर जोर दिया जा रहा है।

निर्माणाधीन पुल पर गिरा लॉन्चर, छह घायल

वैशाली। लालगंज में भारतमाला परियोजना के तहत बन रहे एनएच-139डब्ल्यू फोरलेन मार्ग पर निर्माण कार्य के दौरान बड़ा हादसा हो गया। निर्माणाधीन पुल पर काम के दौरान लॉन्चर अचानक भरभराकर नीचे गिर गया। हादसे में कई कर्मचारी घायल हो गए। घायलों को तत्काल लालगंज रेफरल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां छह कर्मचारियों का इलाज किया गया। इनमें से दो की हालत गंभीर होने पर उन्हें बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया। सूचना मिलते ही पुलिस और संबंधित अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। लॉन्चर गिरने के कारणों की जांच की जा रही है। तकनीकी खराबी या निर्माण कार्य में लापरवाही समेत सभी पहलुओं की पड़ताल की जा रही है।

12 सितंबर को लोक अदालत में निपटाएं 90 दिन पुराने ट्रैफिक चालान

जन जन विचार
...✍ प्रणय कुमार, मधुबनी

लंबित यातायात चालानों के निपटारे को लेकर मधुबनी में जागरूकता अभियान शुरू किया गया है। 12 सितंबर को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के मद्देनजर जिला न्यायालय परिसर से जागरूकता रथ रवाना किया गया। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने हरी झंडी दिखाकर रथ को रवाना किया। राष्ट्रीय लोक अदालत में 12 जून 2026 तक लंबित और 90 दिनों से अधिक पुराने यातायात चालानों के निपटारे का अवसर मिलेगा। वाहन स्वामी इस दौरान एकमुश्त यातायात चालान निपटान योजना-2026 का लाभ भी उठा सकते हैं।

जागरूकता रथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण कर वाहन स्वामियों को लंबित चालानों के निपटारे की प्रक्रिया और लोक अदालत के बारे में जानकारी देगा।

प्रशासन की ओर से वाहन स्वामियों से अपील की गई है कि वे 12 सितंबर को निर्धारित स्थल पर आवश्यक दस्तावेज और चालान की प्रति लेकर पहुंचें तथा अपने लंबित चालानों का विधिवत निपटारा कराएं। इस अवसर पर जिला परिवहन पदाधिकारी राम बाबू सहित जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भारत की बेटियों ने पाकिस्तान को 19-0 से रौंदा

जूनियर एशिया कप में भारत की सबसे बड़ी जीत

जन जन विचार
...✍ मोक्वी, चीन

भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने जूनियर एशिया कप के क्वार्टर फाइनल में पाकिस्तान को 19-0 से हराकर सेमीफाइनल में शानदार प्रवेश किया। यह जूनियर महिला हॉकी में भारत की अब तक की सबसे बड़ी जीत मानी जा रही है। गत विजेता भारतीय टीम ने मुकाबले के दोनों हिस्सों में अपना दबदबा बनाए रखा और पाकिस्तान को पूरे मैच में एक भी गोल करने का मौका नहीं दिया। भारत ने पहले हाफ में ही 10 गोल दागकर मुकाबले का रुख तय कर दिया था। दूसरे हाफ में भी भारतीय खिलाड़ियों ने आक्रामक खेल जारी रखते हुए नौ और गोल किए।

पूजा मलिक की हैट्रिक रोशनी ने किया 19वां गोल

भारत की ओर से पूजा मलिक सबसे प्रभावशाली खिलाड़ी रहीं। उन्होंने तीन गोल दागकर हैट्रिक पूरी की और उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

सानिका चंद्रकांत माने, मधु सिदार, सुप्रिया और रोशनी ऐंद ने भी दो-दो गोल किए। भारत की ओर से पूजा साहू, तनुश्री दिनेश कड़ू, सुखवीर कौर, गीता यादव, तनुजा टोप्पो, पूर्णिमा यादव, कृष्णा शर्मा और बिनीमा धन ने भी गोल कर टीम की जीत में योगदान दिया।

पहले क्वार्टर में ही भारत ने पांच गोल कर दिए थे। इसके बाद दूसरे क्वार्टर में पांच और गोल हुए और मध्यांतर तक स्कोर 10-0 हो चुका था। तीसरे क्वार्टर में तीन तथा अंतिम क्वार्टर में छह गोल कर भारत ने जीत का अंतर 19-0 तक पहुंचा दिया।

पूजा मलिक ने 49वें और 51वें मिनट में लगातार दो गोल कर अपनी हैट्रिक पूरी की, जबकि रोशनी ऐंद ने 60वें मिनट में भारत का 19वां गोल किया।

18 पेनल्टी कॉर्नर, पाकिस्तान पूरी तरह बेअसर

मुकाबले में भारतीय टीम का आक्रमण कितना प्रभावी रहा, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि भारत को 18 पेनल्टी कॉर्नर और एक पेनल्टी स्ट्रोक मिला। इसके मुकाबले पाकिस्तान की टीम पूरे मैच में न तो कोई गोल कर सकी और न ही उसे पेनल्टी कॉर्नर या पेनल्टी स्ट्रोक मिला।

ग्रुप चरण में भी अजेय रहा भारत

क्वार्टर फाइनल से पहले भारतीय टीम ने ग्रुप चरण में भी शानदार प्रदर्शन किया। भारत ने जापान, मलेशिया और दक्षिण कोरिया को हराकर अपने समूह में शीर्ष स्थान हासिल किया था। चीन के खिलाफ उसका मुकाबला 0-0 से बराबरी पर समाप्त हुआ था। अब सेमीफाइनल में भारत का सामना दक्षिण कोरिया और मलेशिया के बीच होने वाले क्वार्टर फाइनल के विजेता से होगा। सेमीफाइनल 12 सितंबर को खेला जाएगा।

लगातार तीसरी बार चैंपियन बनने का लक्ष्य

भारतीय टीम की नजर अब खिताबी हैट्रिक पर है। भारत ने जूनियर एशिया कप के 2023 और 2024 संस्करणों में खिताब जीता था। 2021 का आयोजन कोविड-19 महामारी के कारण रद्द कर दिया गया था।

भारत 10वीं बार विमेंस एशिया कप के फाइनल में

जन जन विचार
...✍ दुबई

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बांग्लादेश को 40 रन से हराकर विमेंस एशिया कप के फाइनल में 10वीं बार प्रवेश कर लिया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 149 रन बनाए और जवाब में बांग्लादेश को 109 रन पर रोक दिया।

भारत की जीत की नींव शेफाली वर्मा ने रखी। उन्होंने महज 40 गेंदों पर 64 रन की आक्रामक पारी खेली, जिसमें 7 चौके और 3 छक्के शामिल रहे। इस शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। प्रतिका रावल ने 20 रन बनाए, जबकि कप्तान हरमनप्रीत कौर 24 रन बनाकर नाबाद रहीं। ऋचा घोष ने 21 रन का योगदान दिया। अंतिम ओवरों में दीप्ति शर्मा ने भी तेज 13 रन बनाकर टीम को 149 रन तक पहुंचाने में मदद की।

150 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी। दीप्ति शर्मा ने 4 ओवर में 26 रन देकर 3 विकेट झटके। प्रेमा रावत और श्री चरणी ने भी महत्वपूर्ण विकेट निकाले, जबकि नंदनी शर्मा ने आखिरी ओवर में लगातार दो विकेट लेकर बांग्लादेश की पारी समेट दी।

भारत का यह विमेंस एशिया कप के इतिहास में 10वां फाइनल है। टीम चार बार एकदिवसीय और अब छह बार टी-20 प्रारूप के फाइनल में पहुंच चुकी है। भारत ने टी-20 प्रारूप में 2012, 2016 और 2022 में खिताब जीता है, जबकि 2018 और 2024 में उपविजेता रहा था। फाइनल 13 सितंबर को रात 8 बजे दुबई में खेला जाएगा। भारत का सामना दूसरे सेमीफाइनल में श्रीलंका और पाकिस्तान के बीच होने वाले मुकाबले के विजेता से होगा। भारतीय महिला टीम ने बल्लेबाजी और गेंदबाजी-दोनों मोर्चों पर दबदबा कायम कर फाइनल में जगह बनाई है। शेफाली की आक्रामक बल्लेबाजी और दीप्ति की प्रभावी गेंदबाजी ने जीत को आसान बनाया। अब नजर 13 सितंबर के खिताबी मुकाबले पर है-जहां भारत की नजर एक और एशिया कप ट्रॉफी पर होगी।

भारत-अफगानिस्तान पहला टी-20 तेरह को ही

नई दिल्ली। भारत और अफगानिस्तान के बीच तीन टी-20 मुकाबलों की श्रृंखला का पहला मुकाबला 13 सितंबर को दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में तय कार्यक्रम के अनुसार ही खेला जाएगा।

दिल्ली यातायात पुलिस ने 12-13 सितंबर को होने वाले ब्रिक्स सम्मेलन के मद्देनजर सुरक्षा और यातायात व्यवस्था को लेकर चिंता जताते हुए मुकाबले की तारीख बदलने की अपील की थी। सम्मेलन भारत मंडपम में होगा, जो अरुण जेटली स्टेडियम से करीब 5 किलोमीटर दूर है।

डीडीसीए के साथ बैठक के बाद यातायात पुलिस ने जरूरी सहयोग और व्यवस्था का भरोसा दिया। इसके बाद डीडीसीए ने स्पष्ट किया कि मुकाबला तय तारीख पर ही होगा।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

भारत के पास 190 परमाणु...

गई हैं। परमाणु हथियारों के वास्तविक डिजाइन, उनमें इस्तेमाल होने वाली सामग्री और कितने हथियार परिचालन स्थिति में हैं, जैसी महत्वपूर्ण जानकारियां सार्वजनिक नहीं हैं। इसलिए अलग-अलग संस्थाओं के अनुमानों में अंतर संभव है।

परमाणु त्रिकोण पर बढ़ता जोर

भारत की रणनीतिक क्षमता में परमाणु त्रिकोण को अहम माना जाता है-यानी जमीन, हवा और समुद्र से परमाणु हथियार पहुंचाने की क्षमता। नई पीढ़ी की मिसाइलों और पनडुब्बी आधारित प्रणालियों का विकास इसी व्यापक रणनीतिक ढांचे का हिस्सा है। दक्षिण एशिया में चीन और पाकिस्तान की परमाणु क्षमताओं के बीच भारत का अपने प्रतिरोधक ढांचे को मजबूत करना क्षेत्रीय सुरक्षा समीकरणों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

सात साल बाद जिनपिंग...

सकते हैं। दोनों देशों के बीच पिछले कुछ समय में सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर संवाद बढ़ा है। सीमा से जुड़े मुद्दों को सुलझाने के लिए दोनों पक्षों के अधिकारियों और सैन्य कमांडरों के बीच बैठकें भी हुई हैं। भारत की प्रमुख चिंता चीन के साथ लगातार बढ़ता व्यापार घाटा है। वित्त वर्ष 2025-26 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार करीब 151 अरब डॉलर रहा। इस दौरान भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा करीब 112 अरब डॉलर रहा। चीन से भारत का आयात 131 अरब डॉलर से अधिक रहा, जबकि भारत का निर्यात लगभग 19.5 अरब डॉलर ही रहा।

2020 के तनाव के बाद रिश्तों में बदलाव : पूर्वी लद्दाख में 2020 के सैन्य टकराव के बाद भारत ने चीनी कंपनियों और कई चीनी मोबाइल एप पर कड़े प्रतिबंध लगाए थे। इसके बाद दोनों देशों के आर्थिक और राजनीतिक संबंधों में तनाव बढ़ गया था। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में उच्चस्तरीय मुलाकातों और बातचीत के जरिए रिश्तों को धीरे-धीरे पटरी पर लाने की कोशिश हुई है।

विदेश मंत्रालय की ओर से भी हाल में संकेत दिया गया है कि भारत-चीन संबंध सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। लोगों के बीच संपर्क और वीजा व्यवस्था को सामान्य बनाना भी इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जा रहा है।

ब्रिक्स के मंच से रिश्तों को नई गति देने की कोशिश : शी जिनपिंग की भारत यात्रा केवल द्विपक्षीय रिश्तों तक सीमित नहीं रहेगी। ब्रिक्स और एससीओ जैसे बहुपक्षीय मंचों के भविष्य, वैश्विक आर्थिक व्यवस्था और दोनों देशों के सहयोग पर भी चर्चा की संभावना है। चीन की ओर से भी भारत के साथ आर्थिक और कारोबारी संबंध मजबूत करने के संकेत दिए जा रहे हैं। चीन के सरकारी मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स में प्रकाशित लेखों में भारत-चीन व्यापार को परस्पर लाभकारी बताते हुए भारतीय बाजार में चीनी कंपनियों के लिए निष्पक्ष कारोबारी माहौल की मांग की गई है।

श्रद्धा की ताकत के आगे मसालेदार सिनेमा फीका

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

'हनुमान अंश' की कमाई ने चौंकाया

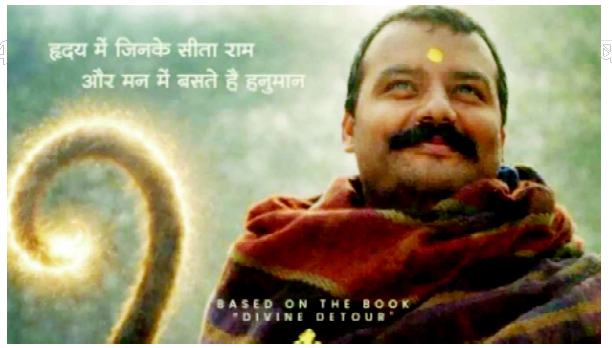

बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों एक ऐसी फिल्म की चर्चा है, जिसने बड़े बजट, बड़े सितारों और भरपूर एक्शन वाली फिल्मों के बीच अपनी अलग पहचान बना ली है। 'हनुमान अंश' ने अपनी कहानी, आध्यात्मिक भाव और दर्शकों की आस्था के दम पर सिनेमाघरों में ऐसा प्रदर्शन किया है, जिसकी शायद फिल्म उद्योग ने भी उम्मीद नहीं की थी। मंगलवार की कमाई के बाद फिल्म की दुनियाभर की कमाई 200 करोड़ रुपए के बेहद करीब पहुंच गई है।

नीम करौरी बाबा के जीवन से प्रेरित यह फिल्म सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि श्रद्धा और आध्यात्मिक यात्रा को पर्दे पर उतारने की कोशिश करती है। यही वजह है कि फिल्म को देखने के लिए दर्शकों का रुझान लगातार बना हुआ है।

33 दिन में 169.20 करोड़

फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर अब तक करीब 143.13 करोड़ रुपए का नेट कलेक्शन किया है। वहीं, उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार दुनियाभर में फिल्म की कमाई करीब 169.20 करोड़ रुपए तक पहुंच चुकी है। यानी 200 करोड़ के आंकड़े तक पहुंचने के लिए फिल्म को लगभग 30.8 करोड़ रुपए और कमाने हैं।

दिलचस्प बात यह है कि फिल्म का बजट महज करीब 2 करोड़ रुपए बताया जा रहा है। ऐसे में इसकी कमाई को सिर्फ बॉक्स ऑफिस सफलता कहना पर्याप्त नहीं होगा। निवेश के मुकाबले फिल्म ने असाधारण मुनाफा दर्ज किया है।

सोमवार को फिल्म ने करीब 10 करोड़ रुपए की एकदिवसीय कमाई की थी। इसके बाद मंगलवार को कमाई और बढ़ी और फिल्म ने लगभग 11 करोड़ रुपए का कारोबार किया। 33वें दिन भी दर्शकों का सिनेमाघरों तक पहुंचना इस बात का संकेत है कि फिल्म ने अपने दर्शक वर्ग के बीच मजबूत पकड़ बना ली है।

फिल्म की यह सफलता इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि लंबे समय तक बॉक्स ऑफिस पर टिके रहने के लिए आमतौर पर बड़े सितारों, भारी प्रचार और विशाल बजट को अहम माना जाता है। 'हनुमान अंश' ने इस धारणा को काफी हद तक चुनौती दी है।

विदेशों में भी रिलीज की तैयारी

घरेलू बाजार में फिल्म की सफलता के बाद अब इसके निर्माताओं ने विदेशों में भी रिलीज की तैयारी की है। फिल्म 11 सितंबर को विदेशी बाजारों में रिलीज किए जाने की योजना है। ऐसे में माना जा रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय रिलीज के बाद इसकी वैश्विक कमाई में और तेजी आ सकती है।

छोटी फिल्म की बड़ी जीत

'हनुमान अंश' की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल 200 करोड़ के करीब पहुंचना नहीं है। असली कहानी यह है कि बेहद सीमित बजट में बनी एक श्रद्धा-प्रधान फिल्म ने दर्शकों को सिनेमाघर तक खींचने में कामयाबी हासिल की।

आज जब बॉक्स ऑफिस पर एक्शन, हिंसा, बड़े सितारे और भारी-भरकम बजट चर्चा में रहते हैं, तब 'हनुमान अंश' की सफलता यह सवाल जरूर खड़ा करती है कि क्या दर्शक अब भी ऐसी कहानियों के लिए तैयार हैं, जिनमें आस्था, आध्यात्मिकता और भावनात्मक जुड़ाव प्रमुख हो?

फिल्म की कमाई फिलहाल इस सवाल का जवाब 'हां' में देती दिखाई दे रही है। 200 करोड़ का आंकड़ा अब दूर नहीं है और यदि विदेशी रिलीज से भी उम्मीद के मुताबिक प्रतिक्रिया मिली, तो यह कम बजट की फिल्मों के लिए एक नई मिसाल कायम कर सकती है।

फिल्म की कहानी

फिल्म की कहानी नीम करौरी बाबा के जीवन के उस दौर पर केंद्रित है, जब वे पारिवारिक परिस्थितियों के बाद घर छोड़कर आध्यात्मिक यात्रा पर निकलते हैं। इसके बाद देश के अलग-अलग हिस्सों में उनकी तपस्या, साधना और आध्यात्मिक अनुभवों को कहानी का आधार बनाया गया है। मंदिरों के पंडितों से लेकर अघोरियों तक के संपर्क और कठिन तपस्या के प्रसंग फिल्म की कहानी को आध्यात्मिक रंग देते हैं। निर्माताओं ने इसे इस तरह पेश किया है कि दर्शक शुरुआत से अंत तक कहानी से जुड़े रहें।

80 के दशक की तस्वीरों का जादू, एआई ने लौटाई पुरानी यादें

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

जिस दौर की तस्वीरें आज अलबम के पन्नों में सिमटकर रह गई हैं, वही दौर अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से एक बार फिर लोगों की आंखों के सामने लौट आया है। इंटरनेट और सामाजिक माध्यमों पर इन दिनों 1980 के दशक की शैली में तैयार की गई तस्वीरों का चलन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। लोग अपनी मौजूदा तस्वीरों को ऐसे रूप में बदल रहे हैं, मानो वह तस्वीर चार दशक पहले किसी कैमरे से खींची गई हो।

तस्वीरों में पुराने दौर के घने बाल, बड़े आकार के चश्मे, रंगीन कपड़े, पारंपरिक आभूषण, मुलायम रोशनी, पुराने स्टूडियो की पृष्ठभूमि और फिल्मी तस्वीरों जैसा हल्का दानेदार प्रभाव दिखाई देता है। यही वजह है कि सामान्य तस्वीर भी देखते ही देखते पुराने पारिवारिक अलबम या फिल्मी पत्रिका के आवरण जैसी नजर आने लगती है।

क्यों पसंद आ रहा है 80 का दशक?

1980 का दशक भारतीय समाज में फैशन, सिनेमा और संगीत के लिहाज से अपनी अलग पहचान रखता है। उस दौर की पोशाक, केश सज्जा, रंगों और तस्वीर खिंचवाने के अंदाज में एक खास आकर्षण था।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इसी पुराने आकर्षण को नई तकनीक के साथ जोड़ दिया है। उपयोगकर्ता अपनी तस्वीर देकर यह निर्देश दे सकता है कि उसे 1980 के दशक के पारिवारिक चित्र, विवाह समारोह, महाविद्यालय की तस्वीर या पुराने फिल्मी स्टूडियो के अंदाज में तैयार किया जाए।

तस्वीर बनती कैसे है?

इस पूरी प्रक्रिया को समझना बहुत मुश्किल नहीं है। उपयोगकर्ता अपनी साफ तस्वीर कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तस्वीर बनाने वाले उपकरण में डालता है और बताता है कि तस्वीर को किस दौर और किस शैली में बदलना है।

उदाहरण के लिए निर्देश में 1980 के दशक के कपड़े, उस समय की केश सज्जा, पुराने कैमरे जैसा प्रकाश, स्टूडियो की पृष्ठभूमि और फिल्मी तस्वीर जैसी बनावट का उल्लेख किया जा सकता है। इसके बाद प्रणाली इन निर्देशों के आधार पर नई तस्वीर तैयार करती है। यह केवल पुराने रंग का प्रभाव लगाने जैसा नहीं है। तस्वीर में कपड़े, बाल, पृष्ठभूमि, प्रकाश और कई अन्य दृश्य तत्व भी बदले जा सकते हैं।

असली तस्वीर और बनाई गई तस्वीर में फर्क जरूरी

यह चलन मनोरंजन और रचनात्मकता के लिहाज से आकर्षक जरूर है, लेकिन तस्वीर साझा करते समय यह स्पष्ट करना जरूरी है कि वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तैयार की गई है। पुराने दौर की शैली में बनी तस्वीर देखने वाले को वास्तविक पुरानी तस्वीर लग सकती है। खासकर जब तस्वीर में किसी व्यक्ति, स्थान या घटना को लेकर गलत संदर्भ जोड़ दिया जाए, तब भ्रम की स्थिति पैदा हो सकती है। इसलिए ऐसी तस्वीरों को साझा करते समय उसके कृत्रिम रूप से तैयार होने की जानकारी देना बेहतर है।

अपनी तस्वीर देते समय सावधानी भी जरूरी

किसी भी तस्वीर को किसी ऑनलाइन सेवा में डालने से पहले उसकी गोपनीयता नीति समझना उपयोगी है। खासकर ऐसी तस्वीरों में जिनमें परिवार के सदस्य, बच्चे या निजी स्थान दिखाई दे रहे हों।

निजी या संवेदनशील तस्वीरें सोच-समझकर ही साझा करें।

अनजान तस्वीर बनाने वाली सेवाओं में व्यक्तिगत जानकारी देने से बचें।

तस्वीर तैयार होने के बाद उसे सार्वजनिक रूप से साझा करने से पहले एक बार जरूर देखें।

कृत्रिम रूप से बदली गई तस्वीर को वास्तविक पुरानी तस्वीर बताकर साझा न करें।

नेताओं और सार्वजनिक हस्तियों ने भी अपनाया

इस चलन की पहुंच आम उपयोगकर्ताओं से आगे बढ़कर सार्वजनिक जीवन की हस्तियों तक पहुंच गई है। हाल की रिपोर्टों के अनुसार कई भारतीय नेताओं ने भी 1980 के दशक की शैली वाली तस्वीरें साझा की हैं। कुछ ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तैयार तस्वीरें साझा कीं, जबकि कुछ ने वास्तव में उस दौर की अपनी पुरानी तस्वीरें सामने रखीं।

यही अंतर इस चलन को और दिलचस्प बनाता है-एक ओर तकनीक लोगों को यह कल्पना करने का अवसर दे रही है कि वे पुराने दौर में कैसे दिखाई देते, वहीं दूसरी ओर वास्तविक पुरानी तस्वीरें उस समय की असली यादों को सामने ला रही हैं। पुराने दौर की याद और नई तकनीक का मेल ही इस चलन की सबसे बड़ी ताकत है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने तस्वीरों को केवल सजाने का माध्यम नहीं छोड़ा है, बल्कि अब यह लोगों को अपने वर्तमान चेहरे को किसी बीते दौर की कल्पित दुनिया में देखने का अवसर दे रही है। लेकिन तकनीक जितनी प्रभावशाली है, उतनी ही जिम्मेदारी भी मांगती है। तस्वीर सुंदर और मनोरंजक हो सकती है, पर उसे वास्तविक इतिहास या वास्तविक घटना के प्रमाण के रूप में पेश नहीं किया जाना चाहिए।

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

Guwahati, 4 September, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, ভাদ্ৰ কৃষ্ণ পক্ষ, অমাৱস্যা, শকাব্দ ১৯৪৮

গুৱাহাটীত বহিঃ ৰাজ্যৰ কম দামত তেল ক্ৰয় কৰি ৰমৰমিয়া বেহাৰ এক কাহিনী

জন জন বিচাৰ
...✍দীপঙ্কৰ দেৱ শৰ্মা

সঁচাকৈয়ে যি সময়ত পেট্ৰল - ডিজেলৰ দাম বৃদ্ধিৰ বাবে জনসাধাৰণ কোঙা হৈ পৰিছে সেই সময়তেই একাংশ কলা বেপাৰীয়ে ইয়াক ধন ঘটাৰ আহিলা হিচাপে তৈয়াৰ কৰাত ব্যস্ত হৈ পৰিছে। উল্লেখযোগ্য যে গুৱাহাটীৰ লখৰাস্থিত গড়চুকত হিন্দুস্থান পেট্ৰোলিয়ামৰ এই ডিপোত পিতা পুত্ৰ ক্ৰমে শ্ৰীপাল আৰু অমিত জৈনে ভাৰতীয় ৰেলৰ তেলৰ টেংকাৰৰ পৰা তেল কাটি থকা অৱস্থাতে ৰেলৱে সুৰক্ষা বাহিনীয়ে হাত লোতে ধৰা পেলায়। উল্লেখযোগ্য যে ৰেলৱেৰ উচ্চতম বিষয়াক মেনেজ কৰি খালী টেংকাৰকে দেখুৱাই দীৰ্ঘদিন ধৰি এই চোৰাং তেলৰ ৰমৰমিয়া বেহা চলাই আহিছে পিতা পুত্ৰই।

সূত্ৰৰ খবৰ অনুসৰি আচলতে এওঁলোকক জৈন উপাধিৰ হলেও আচল নাম শ্ৰী পাল চুড়ীৱাল বা অমিত চুড়ীৱাল। এই পেট্ৰল ডিপো পূৰ্বে শ্ৰী পেট্ৰল পাম্প হিচাপে জনাজাত আছিল আৰু ইয়াৰ মালিক আছিল সুৰেশ কুমাৰ জৈন। এই পিতা পুত্ৰৰ সমগ্ৰ উত্তৰ পূৰ্বাঞ্চলত তেল ডিপো আছে।বহু ঠাইত কাকতে কলমে এওঁলোক মালিক নহয় হয় কোনোবা ট্ৰাক ড্ৰাইভাৰ নহয় কোনোবা মজদূৰৰ নামত আছে। আমাৰ হাতত পৰা খবৰ অনুসৰি এওঁলোকৰ অৰুণাচলত ২০ টা, মেঘালয়ত ৩০টা, নাগালেণ্ডত ২টা, মণিপুৰত ১০টা, মিজোৰামত ৮টা আৰু অসমত বহুকেইটা ডিপো চলি আছে। আনহাতে উত্তৰ পূৰ্বাঞ্চলত আন ৰাজ্যত পেট্ৰোলিয়াম সামগ্ৰীৰ মূল্য অসমতকৈ যিহেতু কম সেয়েহে তাৰ পৰা তেল আনি অসমৰ নিজৰ ডিপোত বিক্ৰী কৰি লাখ লাখ টকা অবৈধভাৱে ঘটি আছে। উল্লেখযোগ্য যে গড়চুক আৰক্ষীৰ জিম্মাত থকা টেংকাৰখন মেনেজ কৰি মোকলাবলৈ ইতিমধ্যে চেষ্টা চলি আছে। উল্লেখযোগ্য যে ইতিমধ্যে Garchuk ps case number 218/2026.U/S 303/(2)316/(5)317/(2)61(2)BNSRW. Section 7Act গোচৰ ৰুজু হৈছে। প্ৰশ্ন উত্থাপন হয় এটা প্ৰেট্ৰল ডিপোত অবৈধ তেল ধৰা পৰাৰ পিছত কেনেকৈ এতিয়াও ডিপো মুকলি হৈ আছে।

আমি পূৰ্বে উল্লেখ কৰিছোঁ যে শ্ৰীপাল জৈন আৰু অমিত জৈন ওৰফে অংকিত জৈন হিচাপেও জনাজাত, এই দুজনৰ ছত্ৰছায়াত এক তেলৰ চিন্ডিকেট চলি আছে। তেওঁলোকৰ নেক্সাস সমগ্ৰ উত্তৰ পূৰ্বাঞ্চলত পৰিবৰ্ধিত। উল্লেখযোগ্য যে তেওঁলোকে মাহেকত প্ৰায় ১০০ কোটি টকাৰ অধিক কৰফাকি কৰে। প্ৰসঙ্গক্ৰমে কব পাৰি যে তেওঁলোকৰ পৰিয়ালৰে ভাগচন্দ জৈন (চুড়ীৱাল)ৰ তেল ডিপোসমূহত যেনে মেঘালয়ত থকা তেলডিপোত, যিহেতু মেঘালয়ত তেলৰ দাম অসমতকৈ কম সেয়েহে তাৰ তেল আনি অসমত অধিক মূল্যত বিক্ৰী কৰি কৰ ফাঁকি দিয়ে। সেইদৰে অসমত প্ৰতি লিটাৰ পেট্ৰলৰ গড় মূল্য ১০৬.৬২ সেইদৰে ডিজেলৰ গড় মূল্য ৯৩! ৯৪ টকা। মেঘালয়ত ১০২ টকা পেট্ৰল আৰু ডিজেল ৯৩ টকা গড়মূল্য। অৰুণাচল প্ৰদেশত আকৌ পেট্ৰল ৯৩ টকা ডিজেল ৮৯ টকা, নগালেণ্ডৰ পেট্ৰলৰ দাম ১০৩ টকা ডিজেলৰ দাম ৯৩ টকা। এতিয়া নিশ্চয় গম পাইছে অৰুণাচল বা মেঘালয়ৰ তেল কেনেকৈ অসমলৈ ঘূৰি আহি মাহে শ কোটি টকাৰ অবৈধ মুনাফা লাভ কৰে। আচলতে ৰামায়নৰ ডোহাৰ দৰে 'নাই চে নাই নেহী লেতে মুছি ছে মুছি নেহী লেতে'। ইয়াত তেল ডিপোৰ ভাগচন্দ ঔ শ্ৰী পাল নেহী লেতে। এডচাষ্ট কৰ লেতে। আচলতে এইদৰেই চলিছে কৰ ফাঁকি আৰু মুনাফাৰ অংক। (পৰবৰ্তী খণ্ডলৈ)

দুলুং সংৰক্ষিত বনাঞ্চলত ৯৭১ প্ৰজাতিৰ পখিলা চিনাক্ত

জন জন বিচাৰ
...✍লখিমপুৰ

অসমৰ লখিমপুৰ জিলাৰ দুলুং সংৰক্ষিত বনাঞ্চলত অনুষ্ঠিত তৃতীয় লখিমপুৰ পখিলা পৰিভ্ৰমণ-২০২৬ত ৯৭১ৰোঅধিক প্ৰজাতিৰ পখিলাৰ সন্ধান লাভ কৰা হৈছে। ৬ ছেপ্টেম্বৰত অনুষ্ঠিত এই প্ৰকৃতি পৰ্যবেক্ষণ কাৰ্যসূচীত পখিলাৰ লগতে ১০ৰো অধিক প্ৰজাতিৰ ফেঁচা আৰু ড্ৰেগনফ্লাই সদৃশ পতংগ আৰু প্ৰায় ৩০ প্ৰজাতিৰ চৰাইৰো তথ্য সংগ্ৰহ কৰা হয়। নেচাৰ কনজাৰভেচন ছ'চাইটিৰ উদ্যোগত 'প্ৰজেক্ট পখিলা-অসমৰ পখিলা'ৰ অধীনত আৰু 'বিগ বাটাৰফ্লাই মান্থ'ৰ অংশ হিচাপে এই কাৰ্যসূচী অনুষ্ঠিত কৰা হয়। দেশৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ পৰা অহা শিক্ষাৰ্থী, গৱেষক, প্ৰকৃতিপ্ৰেমী, স্থানীয় লোক আৰু বন্যপ্ৰাণী অনুৰাগীকে ধৰি প্ৰায় ৮০গৰাকী লোকে ইয়াত অংশগ্ৰহণ কৰে।

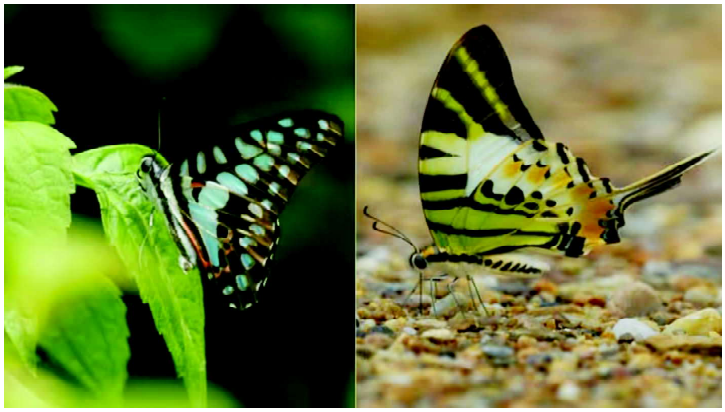

দিল্লী, উত্তৰ প্ৰদেশ, গুজৰাট, ৰাজস্থান, কেৰালা আৰু বিহাৰৰ অংশগ্ৰহণকাৰীৰ লগতে অসমৰ বিভিন্ন অঞ্চলৰ শিক্ষাৰ্থী আৰু প্ৰকৃতিপ্ৰেমীয়েও এই পখিলা পৰিভ্ৰমণত অংশ লয়।

নেচাৰ কনজাৰভেচন ছ'চাইটিৰ অধ্যক্ষ তথা 'প্ৰজেক্ট পখিলা'ৰ নেতৃত্বত থকা লৰেন সোনোৱাল আৰু পৰ্যটন বিভাগৰ পৰ্যটন উন্নয়ন বিষয়া মাধৱ দাসে কাৰ্যসূচীটোৰ নেতৃত্ব দিয়ে। অপূৰ্ব সোনোৱাল আৰু কমল মৰাণে ক্ষেত্ৰভিত্তিক কাৰ্যসূচীত সহযোগিতা আগবঢ়ায়।

এই জৈৱ-বৈচিত্ৰ্য সমীক্ষাত অংশগ্ৰহণকাৰীসকলে পখিলাৰ প্ৰজাতি চিনাক্তকৰণ, বাসস্থান, আচৰণ আৰু পৰিৱেশত ইহঁতৰ গুৰুত্বৰ বিষয়ে ব্যৱহাৰিক জ্ঞান লাভ কৰে। চৰাইৰ তালিকাখন মনাশ প্ৰতীম মেধি আৰু যুগল বৰাই প্ৰস্তুত কৰে। আয়োজকসকলৰ মতে, এনে ক্ষেত্ৰভিত্তিক কাৰ্যসূচীয়ে স্থানীয় জৈৱ-বৈচিত্ৰ্যৰ তথ্য নথিভুক্ত কৰাৰ লগতে শিক্ষাৰ্থী আৰু স্থানীয় সমাজক প্ৰকৃতিৰ সৈতে পোনপটীয়াকৈ সংযুক্ত হোৱাৰ সুযোগ দিয়ে। জৈৱ-বৈচিত্ৰ্যৰ প্ৰতি সজাগতা বৃদ্ধি কৰিলে সংৰক্ষণ আৰু দায়িত্বশীল প্ৰকৃতি-ভিত্তিক পৰ্যটনো অধিক শক্তিশালী হ'ব বুলি তেওঁলোকে মত প্ৰকাশ কৰে।

অসম পৰ্যটন, অসম বন বিভাগকে ধৰি বিভিন্ন সংগঠনৰ সহযোগত অনুষ্ঠিত কাৰ্যসূচীৰ সামৰণিত অংশগ্ৰহণকাৰীসকলক প্ৰমাণপত্ৰ প্ৰদান কৰা হয়।

দিল্লীত আক্ৰমণৰ পিছত মণিপুৰী সংগীতশিল্পীৰ মৃত্যু

নতুন দিল্লী: দক্ষিণ-পূব দিল্লীৰ কিলোকৰি গাঁৱত আক্ৰমণৰ বলি হোৱা মণিপুৰী সংগীতশিল্পী চোংথম বিক্ৰম সিং (৫৪) ৰ মৃত্যু ব্যাপক আভ্যন্তৰীণ ৰক্তক্ষৰণৰ ফলত হোৱা বুলি মৰণোত্তৰ পৰীক্ষাৰ প্ৰতিবেদনত প্ৰকাশ পাইছে। আৰক্ষীৰ মতে, দেওবাৰে নিশা ঘৰৰ বাহিৰত হোৱা হুলস্থূল আৰু অত্যধিক শব্দক লৈ এটা দলৰ সৈতে আপত্তি জনোৱাৰ পিছতে বিক্ৰম সিঙক আক্ৰমণ কৰা হৈছিল। অভিযোগ অনুসৰি, মাটিত পৰি যোৱাৰ পিছতো আক্ৰমণকাৰীসকলে তেওঁৰ বুকু আৰু পেটত বাৰে বাৰে গোৰ আৰু ঘুঁচা মাৰে। এইমছৰ মৰণোত্তৰ পৰীক্ষাত বাওঁফালৰ প্ৰথমৰ পৰা একাদশলৈ আৰু সোঁফালৰ ষষ্ঠৰ পৰা নৱমলৈ পাঁজৰৰ হাড় ভঙা পোৱা গৈছে। ভঙা হাড়ৰ চাৰিওফালে ৰক্তক্ষৰণ আৰু তেজৰ চেকা জমা হোৱাৰ লগতে প্লীহাত ছিঙা আঘাতো ধৰা পৰে। চিকিৎসকৰ মতে, বুকু আৰু পেটত হোৱা গুৰুতৰ আঘাতৰ ফলত ব্যাপক আভ্যন্তৰীণ ৰক্তক্ষৰণ হৈ তেওঁৰ মৃত্যু হয়।

কংগ্ৰেছ নেতা দল এৰাত প্ৰদ্যুৎ বৰদলৈ দেৱাশীষ শৰ্মাক ৰকিবুলৰ তীব্ৰ আক্ৰমণ

জন জন বিচাৰ
...ৰূপহীহাট·

সামগুৰি সমষ্টিৰ দুগৰাকী কংগ্ৰেছ নেতাই দল ত্যাগ কৰাৰ পিছতে অসমত কংগ্ৰেছৰ আভ্যন্তৰীণ ৰাজনীতি উত্তপ্ত হৈ পৰিছে। বৃহস্পতিবাৰে ৰূপহীহাটত সংবাদমেল অনুষ্ঠিত কৰি সাংসদ ৰকিবুল হুছেইনে প্ৰাক্তন সাংসদ প্ৰদ্যুৎ বৰদলৈ আৰু প্ৰাক্তন আমোলা দেৱাশীষ শৰ্মাক লক্ষ্য কৰি তীব্ৰ আক্ৰমণ কৰে।

হুছেইনে অভিযোগ কৰে যে পদ হেৰুৱাৰ আশংকাত প্ৰদ্যুৎ বৰদলৈয়ে বিভিন্ন লোকক দলত অন্তৰ্ভুক্ত কৰাৰ চেষ্টা চলাইছে আৰু কংগ্ৰেছৰ কেইবাগৰাকীও কৰ্মীৰ সৈতেও যোগাযোগ কৰিছে। সামগুৰিৰ দুগৰাকী কংগ্ৰেছ নেতাই দল এৰি যোৱাৰ ঘটনাৰ পাছতে তেওঁৰ এই মন্তব্যই দলটোৰ ভিতৰৰ মতানৈক্যক পুনৰ পোহৰলৈ আনিছে।

ইফালে অসম চৰকাৰে চলোৱা তথাকথিত দালালবিৰোধী অভিযানৰ পদ্ধতিক লৈও হুছেইনে প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰে। তেওঁৰ দাবী, দুগৰাকী বিধায়কৰ ফোনকলৰ তথ্য পৰীক্ষা কৰিলে প্ৰকৃত দালালৰ সৈতে কাৰ সম্পৰ্ক আছে সেয়া স্পষ্ট হ'ব পাৰে। সাধাৰণ লোকক অভিযানৰ নামত ভয়-ভাবুকি দিয়াৰো অভিযোগ তোলে সাংসদগৰাকীয়ে।

দেৱাশীষ শৰ্মাৰ বিৰুদ্ধে হুছেইনে অভিযোগ কৰে যে তেওঁ সামগুৰিৰ বিভিন্ন অভিযুক্ত দালালৰ ঘৰলৈ সঘনাই গৈছে। এই সন্দৰ্ভত শৰ্মাৰ বিৰুদ্ধে গোচৰ ৰুজু কৰাৰ হুংকাৰো দিয়ে তেওঁ। ইয়াৰ উপৰি নগাঁও জিলাৰ উপায়ুক্ত হিচাপে কাৰ্যনিৰ্বাহ কৰাৰ সময়ত এগৰাকী মুছলমান মহিলাক বাংলাদেশলৈ 'পুছবেক' কৰাৰ অভিযোগ শৰ্মাৰ বিৰুদ্ধে উত্থাপন কৰে হুছেইনে। তেওঁৰ দাবী, মহিলাগৰাকীক বাংলাদেশী বুলি ঘোষণা কৰা হৈছিল আৰু পৰৱৰ্তী সময়ত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে তেওঁক ভাৰতলৈ ঘূৰাই অনাৰ নিৰ্দেশ দিছিল।

উত্থাপিত অভিযোগসমূহৰ ক্ষেত্ৰত সংশ্লিষ্ট পক্ষৰ প্ৰতিক্ৰিয়া এই বাতৰিলৈকে প্ৰকাশ পোৱা নাই।

মিঠাইত ছাই পোৱা বুলি গ্ৰাহকৰ অভিযোগ

ডিব্ৰুগড়: ডিব্ৰুগড় চহৰৰ এইচ এছ ৰোড অঞ্চলৰ এটা বাণিজ্যিক প্ৰতিষ্ঠানৰ পৰা ক্ৰয় কৰা মিঠাইত ছাই পোৱা বুলি এগৰাকী গ্ৰাহকে অভিযোগ উত্থাপন কৰিছে। ঘটনাক কেন্দ্ৰ কৰি খাদ্যৰ গুণগত মান আৰু পৰিচ্ছন্নতাক লৈ চহৰখনত উদ্বেগ সৃষ্টি হৈছে।

ৰাণিং গেট নিবাসী বন্দনা গগৈয়ে বুধবাৰে পৰিয়ালৰ বাবে 'লেটছ গ' নামৰ প্ৰতিষ্ঠানটোৰ পৰা মিঠাই ক্ৰয় কৰিছিল। অভিযোগ অনুসৰি, ঘৰলৈ আনি পেকেটটো খোলাৰ পিছত পৰিয়ালৰ সদস্যসকলে মিঠাইখিনিৰ ওপৰত ডাঠকৈ ছাইৰ স্তৰ দেখা পায়। মিঠাইখিনিৰ পৰা দুৰ্গন্ধ ওলোৱা আৰু সেয়া খোৱাৰ অনুপযোগী হৈ পৰা বুলিও গগৈয়ে দাবী কৰে।

ঘটনাৰ পিছতে গ্ৰাহকগৰাকীয়ে খাদ্য সুৰক্ষা বিভাগৰ ওচৰত আনুষ্ঠানিক অভিযোগ দাখিল কৰি প্ৰতিষ্ঠানটোৰ বিৰুদ্ধে ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ দাবী জনায়।

এই ঘটনাই বিশেষকৈ মিঠাইৰ দৰে সোনকালে নষ্ট হ'ব পৰা খাদ্য সামগ্ৰীৰ সংৰক্ষণ, পৰিচ্ছন্নতা আৰু গুণগত মান সম্পৰ্কে প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে।

বিশ্বনাথত ঠগ-প্ৰৱঞ্চকৰ বিৰুদ্ধে আৰক্ষীৰ বৃহৎ অভিযান

জন জন বিচাৰ
...বেদদীপ উপাধ্যায়

বিকাশিত আৰু সুৰক্ষিত অসম গঢ়াৰ লক্ষ্যৰে সমাজবিৰোধী তথা আইনবিৰোধী কাৰ্যকলাপৰ বিৰুদ্ধে আৰক্ষীয়ে অভিযান তীব্ৰতৰ কৰিছে। ইয়াৰ অংশ হিচাপে বিশ্বনাথ জিলাৰ বিভিন্ন স্থানত আৰক্ষীয়ে অভিযান চলাই ৰৰ জন সন্দেহযুক্ত ঠগ-প্ৰৱঞ্চকক আটক কৰিছে।

আৰক্ষীৰ অভিযানত চতিয়া থানাৰ অন্তৰ্গত এজন, বিশ্বনাথ থানাৰ অন্তৰ্গত চাৰিজন, বিহালী আৰু গহপুৰ থানাৰ অন্তৰ্গত এজনকৈ আৰু জিনজিয়া থানাৰ অন্তৰ্গত চাৰিজনক আটক কৰা হয়।

বিশ্বনাথৰ বিধায়ক পল্লৱ লোচন দাসে আৰক্ষীৰ এই অভিযানক আদৰণি জনাইছে। তেওঁ কয় যে দুখীয়া আৰু অসহায় লোকক প্ৰৱঞ্চনাৰ জৰিয়তে ধন আত্মসাৎ কৰা বা তেওঁলোকক বিভিন্ন ধৰণে হাৰাশাস্তি কৰা কাৰ্য কোনো কাৰণতে গ্ৰহণযোগ্য নহয়। এনে লোকক সুৰক্ষা দিয়াটো চৰকাৰ আৰু প্ৰশাসনৰ দায়িত্ব বুলিও তেওঁ উল্লেখ কৰে।

বিধায়কগৰাকীয়ে কয় যে মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাৰ নেতৃত্বত ৰাজ্যত প্ৰৱঞ্চকসকলৰ বিৰুদ্ধে গ্ৰহণ কৰা পদক্ষেপে সাধাৰণ ৰাইজক সুৰক্ষা দিয়াত সহায় কৰিব। তেওঁ এই অভিযানৰ বাবে মুখ্যমন্ত্ৰীক ধন্যবাদ আৰু কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰে।

বিশেষ সূত্ৰৰ উদ্ধৃতি দি জানিব পৰা মতে, ৰাজ্যজুৰি চলি থকা এনে অভিযানত ৩০০ৰো অধিক লোকক আটক কৰা হৈছে। আৰক্ষীৰ এই অভিযান আগন্তুক দিনতো অব্যাহত থকাৰ সম্ভাৱনা আছে।

বিশ্বনাথত ৯ জন সন্দেহযুক্ত বাংলাদেশী আটক

জন জন বিচাৰ
...বিশ্বনাথ চাৰিআলি

বিশ্বনাথ জিলা আৰক্ষীয়ে নিশাৰ ভাগত জিলাখনৰ বিভিন্ন স্থানত অভিযান চলাই ৯ জন সন্দেহযুক্ত বাংলাদেশী নাগৰিকক আটক কৰিছে। বিশ্বনাথ জিলাৰ জ্যেষ্ঠ আৰক্ষী অধীক্ষক আছিফ আহমেদে সংবাদমেলযোগে এই অভিযানৰ বিষয়ে জানিবলৈ দিয়ে।

আৰক্ষীৰ সূত্ৰ অনুসৰি, আটকাধীন লোকসকলৰ ভিতৰত ৭ গৰাকী মহিলা আৰু ২ জন পুৰুষ আছে। আৰক্ষীয়ে তেওঁলোকক নবীজল খাতুন, ছাহাৰ খাতুন, মামনী বেগম, ৰহিমা বেগম, চম্পাফুল খাতুন, ফাতেমা খাতুন, আকবৰ আলী, পঁজামাল শ্বেখ আৰু ছাহিদা খাতুন বুলি চিনাক্ত কৰিছে।

জ্যেষ্ঠ আৰক্ষী অধীক্ষকৰ মতে, আটকাধীন লোকসকলে বিশ্বনাথ জিলাৰ বিভিন্ন স্থানত দীৰ্ঘদিন ধৰি অবৈধভাৱে বসবাস কৰি আছিল বুলি প্ৰাথমিক তদন্তত পোহৰলৈ আহিছে। অৱশ্যে তেওঁলোকৰ নাগৰিকত্ব আৰু ভাৰতত বসবাসৰ বৈধতাৰ বিষয়ে আৰক্ষীৰ পৰৱৰ্তী তদন্ত আৰু নথি-পত্ৰ পৰীক্ষাৰ পিছত অধিক তথ্য স্পষ্ট হ'ব। উল্লেখ্য যে, শেহতীয়াকৈ মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই ৰাজ্যৰ সকলো জিলাৰ জ্যেষ্ঠ আৰক্ষী অধীক্ষকৰ সৈতে অনুষ্ঠিত বৈঠকত অবৈধ অনুপ্ৰৱেশকাৰীৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ নিৰ্দেশ দিছিল। সেই নিৰ্দেশৰ পিছতে বিশ্বনাথ আৰক্ষীয়ে অভিযান অধিক তীব্ৰতৰ কৰিছে।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

১১ ছেপ্তেম্বৰ, ২০২৬ৰ পৰা ১৭ ছেপ্তেম্বৰ, ২০২৬লৈ

মেষ : মানসিক অস্থিৰতা থাকিব। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ।

বৃষ: আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত আস্থিৰতা বৃদ্ধি হব পাৰে। কৰ্মব্যস্ততা বৃদ্ধি। চেষ্টাৰ সফলতা থাকিব।

মিথুন: ঘাৰুৱা কাৰ্য্যত অস্থিৰতা থাকিব। আৰ্থিক দিশত নতুন চেতনাৰ উজগৰতা প্ৰকাশ।

কৰ্কট: চেষ্টাৰ ক্ষেত্ৰত বাধাৰ সন্মুখীন হব পাৰে। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। প্ৰেমৰ পৰা আনন্দ লাভ।

সিংহ: খৰচ বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। আনাবস্যকীয় কথাত চেষ্টা পৰাক্ৰম প্ৰদৰ্শনৰ পৰা বিৰত থাকক। আনাবশ্যকিয় দুৰ্ভাৱনাৰ পৰা আতৰি থাকক।

কন্যা : দৰকাৰী সিদ্ধান্তগ্ৰহণৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। আত্মীয় স্বজনৰ মাজত সমাদৰ বৃদ্ধি। চেষ্টাৰ সফলতা থাকিব।

তুলা: দৰকাৰী কাৰঞ্জয্যত কৰ্মদক্ষতা ব্যয়ৰ সম্ভাৱনা আছে। কৰ্মক্ষেত্ৰত সুনাম অৰ্জন। ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে।

বৃশ্চিক: সামাজিক কাৰঞ্জয্যৰ পৰা অস্থিৰতা বৃদ্ধি হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। কৰ্মক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। শাৰিৰীক ক্ষেত্ৰত শুভ।

ধনু : কৰ্মক্ষেত্ৰত অদৰ্কাৰী ব্যস্ততা বৃদ্ধি হব পাৰে। সামাজিক সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব।

মকৰ: ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল। কৰ্মক্ষেত্ৰত অদৰ্কাৰী বাদ বিবাদৰ পৰা আতৰি থাকক। দৈনন্দিন কাম কাজত অস্থিৰতা বৃদ্ধি।

কুম্ভ : দৈনন্দিন বাৰ্তা বিনিময়ত সাবধান হব। কৰ্মদক্ষতাৰ সুনাম বৃদ্ধি। কৰ্মক্ষেত্ৰত ব্যস্ততা বৃদ্ধি হব পাৰে।

মীন: নিত্যানাইমাত্তিক ক্ষেত্ৰত ব্যস্ততা বৃদ্ধি হব পাৰে। সন্তানৰ প্ৰতি যত্নবন হব। ভাগ্যৰ সহায় লাভ।

-হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

অৰুণাচলৰ মানচিত্ৰত অস্পষ্টতাক লৈ কংগ্ৰেছৰ আপত্তি

জন জন বিচাৰ
...ইটানগৰ

ৰাষ্ট্ৰসংঘৰ শেহতীয়াকৈ প্ৰকাশিত বিশ্ব মানচিত্ৰত অৰুণাচল প্ৰদেশক লৈ দেখুওৱা ৰূপক লৈ অৰুণাচল প্ৰদেশ কংগ্ৰেছ সমিতিয়ে তীব্ৰ আপত্তি প্ৰকাশ কৰিছে। কংগ্ৰেছে স্পষ্ট কৰি দিছে যে অৰুণাচল প্ৰদেশ ভাৰতৰ অবিচ্ছেদ্য অংগ আৰু ৰাজ্যখনৰ ভৌগোলিক তথা সাংবিধানিক স্থিতিক লৈ কোনো ধৰণৰ অস্পষ্টতা গ্ৰহণযোগ্য নহয়।

১০ ছেপ্টেম্বৰত অৰুণাচল প্ৰদেশ কংগ্ৰেছ সমিতিৰ সভাপতি বচিৰাম চিৰামে কয় যে কোনো আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় মানচিত্ৰত ৰাজ্যখনৰ স্থিতি সন্দেহজনক বা অস্পষ্ট কৰি তোলা উচিত নহয়। কোনো বিদেশী দাবী, মানচিত্ৰ বা নামকৰণে অৰুণাচল প্ৰদেশৰ ওপৰত ভাৰতৰ সাৰ্বভৌমত্ব সলনি কৰিব নোৱাৰে বুলিও তেওঁ দৃঢ় মত প্ৰকাশ কৰে।

চিৰামে এই বিষয়ত কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে ৰাষ্ট্ৰসংঘৰ ওচৰত জনোৱা আপত্তিক সমৰ্থন কৰে। লগতে তেওঁ স্পষ্ট কৰে যে সমক্ষেত্ৰফলৰ মানচিত্ৰ প্ৰস্তুতৰ ক্ষেত্ৰত অধিক সঠিকতা অনাৰ উদ্দেশ্যে ৰাষ্ট্ৰসংঘৰ সাধাৰণ সভাৰ প্ৰস্তাৱত ভাৰতে সমৰ্থন জনাইছিল। ইয়াক কোনো নিৰ্দিষ্ট আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় সীমা বা ভূখণ্ডগত দাবীৰ স্বীকৃতি হিচাপে গণ্য কৰিব নোৱাৰি।

তেওঁ কয়, কোনো কাল্পনিক বা ভাৰ্চুৱেল মানচিত্ৰ যিমানেই প্ৰভাৱশালী নহওক কিয়, ই কোনো ভূখণ্ডৰ সাৰ্বভৌমত্ব সৃষ্টি, হস্তান্তৰ বা বিলুপ্ত কৰিব নোৱাৰে।

চিৰামৰ মতে, স্বাধীনতাৰ পিছৰে পৰা অৰুণাচল প্ৰদেশ ভাৰতৰ সাংবিধানিক, প্ৰশাসনিক আৰু গণতান্ত্ৰিক ব্যৱস্থাৰ অধীনত পৰিচালিত হৈ আহিছে। ৰাজ্যখনৰ জনসাধাৰণেও দেশৰ গণতান্ত্ৰিক প্ৰক্ৰিয়াত নিৰন্তৰ অংশগ্ৰহণ কৰি আহিছে।

অৰুণাচল কংগ্ৰেছে ৰাষ্ট্ৰসংঘক মানচিত্ৰত ৰাজ্যখনৰ উপস্থাপন পুনৰীক্ষণ কৰি সংশোধন কৰাৰ আহ্বান জনাইছে। ভৱিষ্যতৰ মানচিত্ৰ আৰু ভৌগোলিক তথ্যভাণ্ডাৰত ভাৰতৰ চৰকাৰী স্থিতি আৰু ভূখণ্ডগত অৱস্থান সঠিকভাৱে প্ৰতিফলিত কৰাৰ দাবী জনোৱা হৈছে।

ইফালে কেৱল কূটনৈতিক আপত্তি তে সীমাবদ্ধ নাথাকি সীমান্তৱৰ্তী অঞ্চলত পথ, যোগাযোগ ব্যৱস্থা, ৰসদ, নিৰাপত্তা আন্তঃগাঁথনি আৰু অৰ্থনৈতিক উন্নয়ন অধিক শক্তিশালী কৰাৰ ওপৰতো চিৰামে গুৰুত্ব আৰোপ কৰে।

কেন্দ্ৰৰ বৈদেশিক পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰালয়েও স্পষ্ট কৰিছে যে সমক্ষেত্ৰফলৰ বিশ্ব মানচিত্ৰ সম্পৰ্কীয় ৰাষ্ট্ৰসংঘৰ প্ৰস্তাৱে কোনো নিৰ্দিষ্ট বিশ্ব মানচিত্ৰ বা ৰাজনৈতিক মানচিত্ৰক স্বীকৃতি নিদিয়ে। ভাৰতৰ সাৰ্বভৌম ভূখণ্ড দেশৰ চৰকাৰী মানচিত্ৰ অনুসৰিয়েই প্ৰতিফলিত হ'ব লাগিব বুলি মন্ত্ৰালয়ে পুনৰ উল্লেখ কৰিছে।

চিৰামে দৃঢ়ভাৱে কয়, "অৰুণাচল প্ৰদেশ ভাৰতৰ অবিচ্ছেদ্য অংগ-এই স্থিতিৰ কোনো আপোচৰ প্ৰশ্নই নাই।"

সোনোৱাল কছাৰী স্বায়ত্তশাসিত পৰিষদ নিৰ্বাচনৰ বাবে অগপৰ তৎপৰতা বৃদ্ধি

জন জন বিচাৰ
...ডিব্ৰুগড

সোনোৱাল কছাৰী স্বায়ত্তশাসিত পৰিষদৰ আগন্তুক নিৰ্বাচনক কেন্দ্ৰ কৰি অসম গণ পৰিষদে সাংগঠনিক তৎপৰতা বৃদ্ধি কৰিছে। নিৰ্বাচনৰ আনুষ্ঠানিক সময়সূচী এতিয়াও ঘোষণা হোৱা নাই যদিও পৰিষদৰ বিভিন্ন সমষ্টিত দলটোৱে ধাৰাবাহিকভাৱে সাংগঠনিক সভা অনুষ্ঠিত কৰি নিৰ্বাচনী প্ৰস্তুতি আগবঢ়াইছে।

বৃহস্পতিবাৰে নিশা ১৬ নম্বৰ খোৱাং পৰিষদীয় সমষ্টিৰ নাহৰনীত নিৰ্বাচনী প্ৰস্তুতি সভা অনুষ্ঠিত হয়। সভাত আগন্তুক নিৰ্বাচনৰ প্ৰস্তুতি, দলীয় সাংগঠনিক স্থিতি আৰু সম্ভাব্য প্ৰাৰ্থিত্বক লৈ আলোচনা কৰা হয়। খোৱাং সমষ্টিৰ পৰা জোন শইকীয়াৰ প্ৰাৰ্থিত্বক লৈও সভাত চৰ্চা হয়।

সভাত সোনোৱাল কছাৰী স্বায়ত্তশাসিত পৰিষদ নিৰ্বাচনৰ দলীয় দায়িত্বত থকা প্ৰাক্তন চাবুৱা বিধায়ক পোনাকণ বৰুৱা, অগপৰ কেন্দ্ৰীয় প্ৰতিনিধি পুতুল সোনোৱাল, কেন্দ্ৰীয় সাধাৰণ সম্পাদক সুনীল ৰাজকোঁৱৰ আৰু কৃষক পৰিষদৰ উপ-সভাপতি হৰিশ্বৰ চাংমাই উপস্থিত থাকে। দলৰ কেন্দ্ৰীয় আৰু জিলা সমিতিৰ আন কেইবাগৰাকীও বিষয়ৱৰীয়াই সভাত অংশগ্ৰহণ কৰে।

অগপ নেতৃত্বই প্ৰকাশ কৰা মতে, পৰিষদ নিৰ্বাচনৰ বাবে কোনো মিত্ৰতা চূড়ান্ত নোহ'লে দলটোৱে ৩২টা আসনতে নিজাকৈ প্ৰতিদ্বন্দ্বিতা কৰিবলৈ সাজু। ইতিমধ্যে বিভিন্ন পৰিষদীয় সমষ্টিত দলীয় সাংগঠনিক কাম-কাজ তীব্ৰতৰ কৰা হৈছে। খোৱাং সমষ্টিৰ পৰা দলীয় টিকট বিচৰা জোন শইকীয়াই নিৰ্বাচনত অগপৰ প্ৰতি জনসাধাৰণৰ শক্তিশালী সমৰ্থন লাভ কৰাৰ আশা প্ৰকাশ কৰে। নিৰ্বাচনৰ তাৰিখ চৰকাৰীভাৱে ঘোষণা নকৰিলেও অগপৰ এই তৎপৰতাই পৰিষদ নিৰ্বাচনক কেন্দ্ৰ কৰি ৰাজ্যখনৰ ৰাজনৈতিক তৎপৰতা বৃদ্ধি পোৱাৰ ইংগিত দিছে।

ৰাসায়নিক পদাৰ্থৰে কল পকোৱাৰ অভিযোগ

জন জন বিচাৰ
...নাহৰলগুন

অৰুণাচল প্ৰদেশৰ নাহৰলগুন অঞ্চলত কল কৃত্ৰিমভাৱে পকাবলৈ ৰাসায়নিক পদাৰ্থ ব্যৱহাৰ কৰাৰ অভিযোগক লৈ আৰক্ষীয়ে তদন্ত আৰম্ভ কৰিছে। সামাজিক মাধ্যমত প্ৰচাৰিত এটা ভিডিঅ' কৰ্তৃপক্ষৰ দৃষ্টিগোচৰ হোৱাৰ পিছতে এই পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰা হয়।

নাহৰলগুন—ইটানগৰ ৰাজধানী অঞ্চলৰ আৰক্ষী অধীক্ষক নীলম নেগাই জনোৱা মতে, মঙলবাৰে সামাজিক মাধ্যমত ভিডিঅ'টো প্ৰচাৰ হোৱাৰ বিষয়টো আৰক্ষীৰ নজৰলৈ আহে। ইয়াৰ পিছত বুধবাৰে নাহৰলগুন থানাৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত বিষয়া কে দেৱে ভাৰতীয় ন্যায় সংহিতা আৰু খাদ্য সুৰক্ষা আৰু মানদণ্ড আইন, ২০০৬ৰ সংশ্লিষ্ট ধাৰাত এজাহাৰ পঞ্জীয়ন কৰে।

আৰক্ষী অধীক্ষকগৰাকীয়ে কয় যে ভিডিঅ'টোত দেখুওৱা পদাৰ্থটো প্ৰকৃততে কি আৰু ইয়াৰ ৰাসায়নিক গঠন কেনেধৰণৰ, সেয়া এতিয়াও নিশ্চিত হোৱা নাই। বিজ্ঞানসন্মত পৰীক্ষা আৰু বিস্তৃত তদন্তৰ জৰিয়তেহে পদাৰ্থটোৰ প্ৰকৃতি আৰু কল পকোৱাৰ ক্ষেত্ৰত ইয়াৰ ব্যৱহাৰৰ সত্যতা নিৰ্ধাৰণ কৰা হ'ব।

সামাজিক মাধ্যমত ভাইৰেল ভিডিঅ'ৰ পিছতে আৰক্ষীৰ তদন্ত

আৰক্ষীয়ে এই পদ্ধতিৰ সৈতে জড়িত লোকসকলকো চিনাক্ত কৰাৰ বাবে তদন্ত চলাইছে। তদন্তত খাদ্য সুৰক্ষা বিধি উলংঘনৰ প্ৰমাণ পোৱা গ'লে জড়িতসকলৰ বিৰুদ্ধে আইন অনুসৰি কঠোৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হ'ব বুলি আৰক্ষীয়ে স্পষ্ট কৰিছে।

কৰ্তৃপক্ষই জনোৱা মতে, ভিডিঅ'ত দেখুওৱা পদাৰ্থটোৰ বিজ্ঞানসন্মত পৰীক্ষাৰ ফলাফল লাভ কৰাৰ পিছতহে কল পকোৱাৰ ক্ষেত্ৰত নিষিদ্ধ ৰাসায়নিক পদাৰ্থ ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল নে নাই, সেই বিষয়ে নিশ্চিত সিদ্ধান্তত উপনীত হ'ব পৰা যাব।

খানাপাৰাত পিআইবিএমৰ গুৱাহাটী চৌহদ মুকলি

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলত ব্যৱসায় আৰু পৰিচালনা শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰত নতুন সুযোগৰ দুৱাৰ মুকলি কৰি খানাপাৰাত পুনে ইনষ্টিটিউট অৱ বিজনেছ মেনেজমেণ্টৰ (পিআইবিএম) গুৱাহাটী চৌহদ উদ্বোধন কৰা হয়। বৃহস্পতিবাৰে অসম চৰকাৰৰ শিক্ষামন্ত্ৰী ৰণোজ পেগুৱে নতুন চৌহদটো আনুষ্ঠানিকভাৱে উদ্বোধন কৰে।

খানাপাৰাৰ এই চৌহদটো পিআইবিএমৰ উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলত প্ৰথম প্ৰতিষ্ঠান। পিআইবিএমৰ 'এ' মান্যতা লাভ কৰা আৰু এআইচিটিইৰ অনুমোদিত এই শিক্ষানুষ্ঠানখনে ব্যৱসায়িক পৰিচালনা শিক্ষা আৰু উদ্যোগমুখী শিক্ষাৰ ওপৰত গুৰুত্ব দি আহিছে।

নতুন চৌহদটোৱে অসম তথা উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ শিক্ষাৰ্থীসকলৰ বাবে মানসম্পন্ন পৰিচালনা শিক্ষা লাভৰ সুযোগ অধিক সম্প্ৰসাৰিত কৰিব বুলি আশা কৰা হৈছে। উদ্যোগৰ প্ৰয়োজনীয়তাৰ সৈতে সংগতি ৰাখি শিক্ষাৰ্থীসকলক দক্ষতা বিকাশ, ব্যৱহাৰিক জ্ঞান আৰু আধুনিক পৰিচালনা পদ্ধতিৰ সৈতে পৰিচয় কৰাই দিয়াৰ ওপৰতো গুৰুত্ব দিয়া হ'ব।

চলিত বৰ্ষৰ পৰাই গুৱাহাটী চৌহদত এমবিএ পাঠ্যক্ৰমৰ প্ৰথমটো শৈক্ষিক বৰ্ষ আৰম্ভ হ'ব। ইতিমধ্যে প্ৰথম বৰ্ষত প্ৰায় ৭৫গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে নামভৰ্তি কৰিছে।

উদ্বোধনী অনুষ্ঠানত শিক্ষামন্ত্ৰী ৰণোজ পেগুৱে অসম তথা সমগ্ৰ উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলত মানসম্পন্ন পৰিচালনা শিক্ষাৰ প্ৰসাৰত নতুন চৌহদটোৱে গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰিব বুলি আশা প্ৰকাশ কৰে।

সম্পাদকীয়

আইনৰ ওপৰত বিশ্বাসেই গণতন্ত্ৰৰ শক্তি

সাহাৰানপুৰৰ মছজিদ ধ্বংসৰ ঘটনাই কেৱল এটা ধৰ্মীয় স্থাপনা ভঙাৰ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰা নাই, বৰং প্ৰশাসনিক ক্ষমতা, নাগৰিক অধিকাৰ আৰু আইনৰ শাসনৰ সীমাৰেখাক লৈও গুৰুতৰ প্ৰশ্ন তুলিছে। চৰকাৰী ভূমিত অবৈধ দখল হৈছিল নে নহয়, মছজিদখনৰ সম্পত্তিৰ আইনী মৰ্যাদা কি- এইবোৰৰ চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত আদালতৰ জৰিয়তেই হোৱা উচিত। আইন নিজৰ হাতত তুলি লোৱা বা প্ৰশাসনিক শক্তিৰে কোনো পক্ষক নীৰৱ কৰাটো কেতিয়াও গণতান্ত্ৰিক পদ্ধতি হ'ব নোৱাৰে।

ইলাহাবাদ উচ্চন্যায়ালয়ে ৰাজ্য চৰকাৰৰ পৰা উত্তৰ বিচাৰি ৬.৪১ কোটি টকাৰ ক্ষতিপূৰণ আদায়ৰ নিৰ্দেশত অন্তৰ্বৰ্তীকালীন স্থগিতাদেশ দিয়াটো তাৎপৰ্যপূৰ্ণ। আদালতৰ এই পদক্ষেপে স্পষ্ট কৰি দিলে যে চৰকাৰী ক্ষমতাও আইনৰ ঊৰ্ধ্বত নহয়। প্ৰশাসনৰ সিদ্ধান্তৰ ন্যায়িক পৰ্যালোচনাৰ অধিকাৰ গণতন্ত্ৰৰ এক মৌলিক সুৰক্ষা।

বিশেষকৈ ধৰ্মীয় স্থান জড়িত বিষয়ত প্ৰশাসনে অধিক সতৰ্ক, স্বচ্ছ আৰু সংযত ভূমিকা পালন কৰিব লাগে। অবৈধ দখলৰ অভিযোগ সত্য প্ৰমাণিত হ'লে আইন অনুসৰি কঠোৰ ব্যৱস্থা লোৱাত কোনো আপত্তি থাকিব নোৱাৰে। কিন্তু তাৰ আগতে সংশ্লিষ্ট পক্ষক যথাযথ জাননী, ন্যায্য শুনানি আৰু আদালতৰ কাষ চাপিবলৈ সম্পূৰ্ণ সুযোগ দিয়াটো অত্যাৱশ্যক।

এই ঘটনাই আমাক এটা মৌলিক কথা সোঁৱৰাই দিয়ে-প্ৰশাসনিক সিদ্ধান্ত ক্ষণিকৰ হ'ব পাৰে, কিন্তু আইনৰ ৰায় স্থায়ী ন্যায়ৰ ভিত্তি গঢ়ে। বুলড'জাৰ ব্যৱস্থা সমস্যাৰ সহজ দৃশ্যমান সমাধান যেন লাগিব পাৰে, কিন্তু ই ন্যায়িক প্ৰক্ৰিয়াৰ বিকল্প নহয়।

গণতন্ত্ৰত শক্তি প্ৰদৰ্শন নহয়, আইনৰ নিৰপেক্ষ প্ৰয়োগেই চৰকাৰৰ বিশ্বাসযোগ্যতাৰ মাপকাঠি। সংবিধান, আদালত আৰু নাগৰিক অধিকাৰৰ প্ৰতি সন্মান থাকিলেহে ৰাষ্ট্ৰৰ শক্তি সঁচা অৰ্থত ন্যায়সঙ্গত আৰু সন্মানীয় হৈ থাকে। কোনো অভিযোগ বা বিবাদৰ ক্ষেত্ৰতে সংখ্যাগৰিষ্ঠতাৰ অনুভূতি, ৰাজনৈতিক চাপ অথবা জনমতৰ উত্তেজনাই আইনী সিদ্ধান্তৰ স্থান ল'ব নোৱাৰে। প্ৰশাসনে সকলো পক্ষক সমান দৃষ্টিৰে চাই, তথ্য আৰু নথিপত্ৰৰ ভিত্তিত সিদ্ধান্ত ল'ব লাগিব। তেতিয়াহে আইন-শৃংখলা ৰক্ষা কৰাৰ লগতে সমাজত শান্তি, বিশ্বাস আৰু সম্প্ৰীতি অটুট ৰাখিব পৰা যাব। আৰু অধিক দৃঢ়ভাৱে

জানিবুজি বিৰোধীয়ে দেশৰ ভাবমূৰ্তি নষ্ট কৰিছে

জন জন বিচাৰ
...ডিমেশ চতুৰ্বেদী

পশ্চিম এছিয়া আৰু ৰাছিয়া-ইউক্ৰেইন যুদ্ধৰ বাবে সমগ্ৰ বিশ্বৰ অৰ্থনীতি এই সময়ত যথেষ্ট অস্থিৰ। এনে পৰিস্থিতিত যেতিয়া ভাৰতৰ জিডিপিৰ বিকাশৰ হাৰ ৭.৮ শতাংশ বুলি পৰিসংখ্যা প্ৰকাশ পাইছে, তেতিয়া প্ৰথমতে আনন্দৰ পৰিৱেশ সৃষ্টি হ'ব লাগিছিল। কিন্তু এই পৰিসংখ্যাক লৈয়েই বিতৰ্ক আৰম্ভ হৈছে।

এই বিতৰ্কৰ মূলতে আছে প্ৰাক্তন বিত্ত সচিব সুভাষ চন্দ্ৰ গৰ্গৰ দাবী। তেওঁৰ মতে, জিডিপিৰ ভিত্তি ৮৬ লাখ কোটি টকাৰ পৰা ৮০ লাখ কোটি টকালৈ হ্ৰাস কৰা হৈছে। সেই হিচাপত দেশৰ বিকাশৰ হাৰ শূন্যৰ পৰা ২.৬ শতাংশৰ ভিতৰতহে থাকিব বুলি তেওঁ দাবী কৰিছে।

চৰকাৰী পৰিসংখ্যাক এজন প্ৰাক্তন উচ্চপদস্থ বিষয়াই প্ৰশ্ন কৰাৰ পিছত বিৰোধীয়ে সেই বিষয়টো ৰাজনৈতিকভাৱে উত্থাপন কৰাটো অস্বাভাৱিক নহয়। কিন্তু বৰ্তমানৰ ৰাজনৈতিক পৰিৱেশত চৰকাৰ আৰু বিৰোধীৰ মাজৰ আদৰ্শগত ব্যৱধান ব্যক্তিগত ক্ষোভ আৰু শত্ৰুতালৈ পৰিণত হৈছে। দুয়োপক্ষৰ মাজত পৰস্পৰৰ প্ৰতি বিশ্বাসৰ সম্পৰ্ক প্ৰায় নোহোৱা হৈছে।

ইয়াৰ ফলত দেশক একত্ৰিত কৰা আৰু আগুৱাই নিয়া যিকোনো বিষয় বা পৰিসংখ্যা সন্মুখলৈ আহিলেই বিৰোধীয়ে তাৰ বিশ্বাসযোগ্যতাক লৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে।

অতীততো বিৰোধীয়ে চৰকাৰক আক্ৰমণ কৰিছিল। কিন্তু তেতিয়াও ৰাষ্ট্ৰীয় স্বাৰ্থ আৰু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় সম্পৰ্কৰ ক্ষেত্ৰত এনে পদক্ষেপ লোৱা বা এনে মন্তব্য কৰা নাছিল, যাৰ ফলত দেশৰ ভাবমূৰ্তিৰ ওপৰত নেতিবাচক প্ৰভাৱ পৰিব পাৰে।

ইয়াৰ এটা উদাহৰণ হৈছে ৰাষ্ট্ৰসংঘৰ মানৱাধিকাৰ সম্পৰ্কীয় বিষয়। তদানীন্তন প্ৰধানমন্ত্ৰী পি. ভি. নৰসিংহ ৰাওৰ চৰকাৰে সেই সময়ৰ বিৰোধী দলৰ নেতা অটল বিহাৰী বাজপেয়ীক ভাৰতীয় প্ৰতিনিধি দলৰ নেতৃত্ব দি জেনেভালৈ পঠিয়াইছিল। উদ্দেশ্য আছিল পাকিস্তানৰ বিৰুদ্ধে ভাৰতৰ পক্ষ শক্তিশালীভাৱে উপস্থাপন কৰা। বাজপেয়ীৰ নেতৃত্বত প্ৰতিনিধি দলটো সফল হৈ উভতি অহাৰ পিছত নৰসিংহ ৰাও চৰকাৰে প্ৰট'কল ভংগ কৰি দিল্লী বিমানবন্দৰত তেওঁক আদৰণিও জনাইছিল।

ভাৰতে যেতিয়াই পাৰমাণৱিক পৰীক্ষা কৰিছিল, তেতিয়াও তদানীন্তন বিৰোধীয়ে দেশৰ পক্ষত থিয় দিছিল। অটল বিহাৰী বাজপেয়ীৰ চৰকাৰে পোখৰণত পাৰমাণৱিক পৰীক্ষা কৰাৰ পিছত আমেৰিকাই ভাৰতৰ ওপৰত একাধিক নিষেধাজ্ঞা আৰোপ কৰিছিল। তথাপিও তেতিয়াৰ কংগ্ৰেছে কেৱল ৰাজনৈতিক লাভৰ বাবে বাজপেয়ী চৰকাৰক প্ৰতিদিনে কাঠগড়াত থিয় কৰোৱা নাছিল।

কিন্তু আজিৰ পৰিৱেশত যদি মোদী চৰকাৰে তেনে কোনো পাৰমাণৱিক পৰীক্ষা কৰে, তেন্তে বিৰোধীয়ে হয়তো তাৰ প্ৰমাণ বিচাৰিব। আনকি বিদেশৰ মাটিত গৈ ৰাহুল গান্ধীয়ে পৰীক্ষাটোৰ প্ৰত্যক্ষ প্ৰমাণ আৰু সম্পূৰ্ণ প্ৰক্ৰিয়াৰ তথ্য বিচাৰিব পাৰে।

ঠিক একেধৰণে জিডিপিৰ পৰিসংখ্যাক লৈও মোদী চৰকাৰক মিছলীয়া প্ৰমাণ কৰাৰ চেষ্টা চলিছে।

গালৱান সংঘাতৰ সময়ত ভাৰতীয় সীমান্তৰ কমাণ্ডৰ সৈতে জড়িত এজন চীনা জেনেৰেলক চীনে বৰ্খাস্ত কৰাৰ পিছতো ৰাহুল গান্ধীৰ নেতৃত্বত বিৰোধীয়ে এতিয়াও এই কথা প্ৰচাৰ কৰি আহিছে যে গালৱান উপত্যকাত ভাৰতীয় সেনাক চীনে পৰাস্ত কৰিছিল আৰু চীনে ভাৰতীয় ভূমি দখল কৰিছে।

এনে মন্তব্য এবাৰ-দুবাৰ হ'লে উপেক্ষা কৰিব পৰা যায়। কিন্তু বিৰোধী, বিশেষকৈ ৰাহুল গান্ধীৰ ফালৰ পৰা একে ধৰণৰ মন্তব্য বাৰে বাৰে অহাৰ ফলত এই সন্দেহৰ সৃষ্টি হয় যে তেওঁলোকে ভাৰতৰ ভাবমূৰ্তি ক্ষতিগ্ৰস্ত কৰি আছে।

ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে বিৰোধীৰ এই প্ৰৱণতাক 'ৰাষ্ট্ৰীয়তা বনাম ৰাজনীতি'ৰ বিতৰ্কলৈ আনি ৰাহুল গান্ধীক প্ৰশ্ন কৰে। অৱশ্যে একেধৰণৰ বক্তব্য দিয়া অখিলেশ যাদৱ বা চন্দ্ৰশেখৰ ৰাৱণৰ দৰে নেতাসকলৰ ক্ষেত্ৰত বিজেপিয়ে একে ধৰণৰ কঠোৰতা দেখুৱাই নে নাই, সেয়াও প্ৰশ্নৰ বিষয়।

বিদেশত ভাৰতীয় ব্যৱস্থা আৰু প্ৰতিষ্ঠানক লৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰাৰ ঘটনা নতুন নহয়। ৰাহুল গান্ধীয়ে বষ্টনত ভাৰতীয় সমাজক সম্বোধন কৰি নিৰ্বাচন আয়োগৰ ওপৰত গুৰুতৰ অভিযোগ উত্থাপন কৰিছিল। তেওঁ নিৰ্বাচন আয়োগ 'আপোচ কৰা হৈছে' আৰু ইয়াৰ ব্যৱস্থাত 'বহু ভুল' আছে বুলি মন্তব্য কৰিছিল।

নিৰ্বাচন আয়োগে অৱশ্যে এনে অভিযোগৰ উত্তৰ দি আহিছে। তথাপিও বিৰোধীৰ অভিযোগ থমকি ৰোৱা নাই।

লোকসভা নিৰ্বাচনৰ পিছত আমেৰিকাৰ নেচনেল প্ৰেছ ক্লাবত ৰাহুল গান্ধীয়ে কৈছিল যে ভাৰতত বিগত ১০ বছৰত গণতন্ত্ৰ ভাঙি পৰিছে আৰু এতিয়া সেই গণতন্ত্ৰই সংগ্ৰাম কৰি আছে।

২০২৩ চনৰ ছেপ্টেম্বৰ মাহতো ব্ৰাছেলছত ইউৰোপীয় ইউনিয়নৰ সৈতে হোৱা এক অনুষ্ঠানত ৰাহুল গান্ধীয়ে ভাৰতত বৈষম্য আৰু হিংসা বৃদ্ধি পোৱাৰ অভিযোগ উত্থাপন কৰিছিল।

ইয়াৰ পূৰ্বে ২০২২ চনৰ মে' মাহত লণ্ডনত অনুষ্ঠিত 'আইডিয়াজ ফৰ ইণ্ডিয়া' সন্মিলনত তেওঁ ভাৰতীয় প্ৰতিষ্ঠানসমূহ 'পৰজীৱী' হৈ পৰিছে বুলি মন্তব্য কৰিছিল। তেওঁ চিবিআই আৰু ইডিৰ দৰে ভাৰতীয় প্ৰতিষ্ঠানক 'ডীপ ষ্টেট'ৰ সৈতে তুলনা কৰিছিল। আনকি ভাৰতক পাকিস্তানৰ সৈতেও তুলনা কৰিছিল।

২০১৮ চনত ছিংগাপুৰৰ লী কুৱান ইউ স্কুল অৱ পাব্লিক পলিচীত ভাষণ দি ৰাহুল গান্ধীয়ে ভাৰতত 'ভয় আৰু ঘৃণা'ৰ পৰিৱেশ আছে আৰু বহুত্ববাদৰ আদৰ্শ বিপদৰ সন্মুখীন হৈছে বুলি কৈছিল।

২০১৮ চনৰ জানুৱাৰী মাহত বাহৰেইনত প্ৰবাসী ভাৰতীয়সকলৰ এক অনুষ্ঠানত তেওঁ চৰকাৰে নিবনুৱা সমস্যা সমাধান কৰাত ব্যৰ্থ হৈছে বুলি মন্তব্য কৰিছিল। তেওঁৰ মতে, ইয়াৰ ফলত সমাজত খং আৰু ঘৃণা বৃদ্ধি পাইছে।

ইয়াৰ পূৰ্বে ২০১৭ চনত আমেৰিকাত তেওঁ কৈছিল যে ভাৰত এতিয়া এনে দেশ হৈ থকা নাই, য'ত যিকোনো ব্যক্তিয়ে যিকোনো কথা ক'ব পাৰে।

এনে মন্তব্যৰ জৰিয়তে তেওঁ প্ৰায়ে ভাৰতকেই প্ৰশ্নৰ সন্মুখত থিয় কৰাই আহিছে। পিছত বিৰোধীৰ আন আন দলেও সেই বক্তব্যক ৰাজনৈতিকভাৱে আগুৱাই লৈ যায়। ফলত ভাৰতৰ ভাবমূৰ্তি ক্ষতিগ্ৰস্ত হয় বুলি অভিযোগ উত্থাপন হয়।

এইবাৰ জিডিপিৰ পৰিসংখ্যাক লৈও প্ৰায় একে ধৰণৰ পৰিস্থিতি দেখা গৈছে।

এই পৰিপ্ৰেক্ষিতত ১৯৯১ চনৰ পিছৰ সময়ছোৱা মনত পেলোৱাটো প্ৰাসংগিক।

ৰাজীৱ গান্ধীৰ হত্যাৰ পিছত সৃষ্টি হোৱা সহানুভূতিৰ ঢৌ থকাৰ পিছতো সাধাৰণ নিৰ্বাচনত কংগ্ৰেছে সংখ্যাগৰিষ্ঠতা লাভ কৰিব পৰা নাছিল। পি. ভি. নৰসিংহ ৰাওৰ নেতৃত্বত কংগ্ৰেছৰ সংখ্যালঘু চৰকাৰ গঠন হৈছিল।

সেই নিৰ্বাচনত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে ১২০খন আসন লাভ কৰিছিল। ইমান শক্তিশালী বিৰোধী দল হোৱাৰ পিছতো বিজেপিয়ে অৰ্থনৈতিক সংস্কাৰৰ ক্ষেত্ৰত নৰসিংহ ৰাও চৰকাৰক যথেষ্ট সহযোগিতা কৰিছিল।

বিজেপিয়ে সংসদত চৰকাৰৰ নীতিৰ বিৰোধিতা কৰিছিল, কিন্তু ভোটগ্ৰহণৰ পৰিস্থিতি আহিলে সদন ত্যাগ কৰিছিল। অৰ্থাৎ বিজেপিয়ে একে সময়তে চৰকাৰৰ বিৰোধিতাও কৰিছিল আৰু গুৰুত্বপূৰ্ণ ক্ষেত্ৰত চৰকাৰক পৰোক্ষভাৱে সহযোগিতাও কৰিছিল। এইটোৱেই গণতান্ত্ৰিক পৰিপক্কতাৰ নিদৰ্শন আছিল।

কিন্তু আজিৰ পৰিস্থিতি চাওক। শাসক পক্ষ আৰু বিৰোধীৰ মাজত বিশ্বাসৰ সম্পৰ্ক প্ৰায় নাই। বিৰোধীৰ ৰাজনীতি প্ৰায়ে চৰকাৰক লক্ষ্য কৰি আক্ৰমণ কৰাৰ মাজতে সীমাবদ্ধ হৈ পৰিছে আৰু ইয়াৰ নেতৃত্বত থাকে ৰাহুল গান্ধী। বিৰোধীৰ আন দলসমূহেও বহু সময়ত তেওঁৰ বক্তব্যৰ সৈতে একে সুৰত কথা কয়।

বাজপেয়ীৰ নেতৃত্বত যেতিয়া ভাৰতে পাৰমাণৱিক পৰীক্ষা কৰিছিল, তেতিয়া কংগ্ৰেছেও কম-বেছি পৰিমাণে চৰকাৰৰ সৈতে থিয় দিছিল। সেই সময়ত আমেৰিকাই ভাৰতৰ বিৰুদ্ধে আজিৰ তুলনাত অধিক কঠোৰ পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰিছিল আৰু একাধিক অৰ্থনৈতিক নিষেধাজ্ঞাও আৰোপ কৰিছিল। তেতিয়া কংগ্ৰেছে ইচ্ছা কৰিলে বাজপেয়ী চৰকাৰক প্ৰতিদিনে কাঠগড়াত থিয় কৰাব পাৰিলেহেঁতেন। কিন্তু তেনে কৰা হোৱা নাছিল।

ভাৰত বিশ্ব অৰ্থনৈতিক বিকাশৰ অন্যতম চালিকা শক্তি: আইএমএফ

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

ভাৰতীয় অৰ্থনীতিৰ শক্তিশালী প্ৰদৰ্শনৰ প্ৰতি আস্থা প্ৰকাশ কৰিছে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় মুদ্ৰা নিধিয়ে (আইএমএফ)। ২০২৬ চনৰ এপ্ৰিলৰ পৰা জুনলৈ প্ৰথম ত্ৰৈমাসিকত ভাৰতৰ অৰ্থনৈতিক বিকাশৰ হাৰ ৭.৮ শতাংশ হোৱাৰ পাছত আইএমএফে ভাৰতক বিশ্ব অৰ্থনৈতিক বিকাশৰ অন্যতম প্ৰধান চালিকা শক্তি হিচাপে অভিহিত কৰিছে।

আইএমএফৰ যোগাযোগ বিভাগৰ সঞ্চালক জুলি কোজাকে এক সংবাদ বৈঠকত কয় যে শেহতীয়া ত্ৰৈমাসিকত ভাৰতৰ ৭.৮ শতাংশ বিকাশৰ হাৰ সংস্থাটোৰ পূৰ্বানুমান আৰু আন অৰ্থনৈতিক পৰ্যবেক্ষকৰ অনুমানতকৈও অধিক। সেৱা খণ্ডৰ ইতিবাচক প্ৰদৰ্শন আৰু ৰপ্তানি ক্ষেত্ৰত আশাতকৈ অধিক গতিশীলতাই এই বিকাশত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা লৈছে।

কোজাকে কয় যে ভাৰতীয় অৰ্থনীতি বাহ্যিক চাপৰ সন্মুখীন হৈও যথেষ্ট স্থিতিস্থাপকতা প্ৰদৰ্শন কৰিছে। তেওঁৰ মতে, "ভাৰত বিশ্বৰ বাবে এক প্ৰধান বিকাশৰ ইঞ্জিন হৈ আছে।"

আইএমএফৰ মতে, ভাৰতৰ মুঠ ঘৰুৱা উৎপাদনৰ শেহতীয়া তথ্যত ঔদ্যোগিক উৎপাদন আৰু উৎপাদক মূল্য সূচকৰ নতুন পৰিসংখ্যাও অন্তৰ্ভুক্ত হৈছে। এই তথ্যসমূহে ভাৰতীয় অৰ্থনীতিৰ ভৱিষ্যৎ অনুমান অধিক উন্নত কৰাত সহায় কৰিব।

ইফালে পশ্চিম এছিয়াৰ যুদ্ধৰ ফলত শক্তিৰ মূল্য বৃদ্ধিৰ প্ৰসংগত কোজাকে কয় যে অধিক ব্যয়বহুল শক্তিয়ে সকলো তেল আমদানিকাৰী দেশৰ ওপৰত চাপ সৃষ্টি কৰিছে। অৱশ্যে বহু দেশে এনে বাহ্যিক আঘাতৰ প্ৰভাৱ সীমিত কৰাৰ বাবে বিভিন্ন ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিছে।

আইএমএফে অহা অক্টোবৰত প্ৰকাশ কৰিবলগীয়া বিশ্ব অৰ্থনৈতিক দৃষ্টিভংগীৰ সৈতে ভাৰতৰ বাবে নতুন বিকাশৰ পূৰ্বানুমানো ঘোষণা কৰিব। কোজাকে লগতে কয় যে পশ্চিম এছিয়াৰ সংঘাতৰ ফলত সৃষ্টি হোৱা শক্তি সংকটক বিশ্ব অৰ্থনীতিয়ে আশাতকৈ ভালদৰে মোকাবিলা কৰিছে। ২০২৬ চনত বিশ্ব অৰ্থনৈতিক উৎপাদন প্ৰায় ৩ শতাংশ বৃদ্ধি পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে যদিও বিশ্ব অৰ্থনীতিৰ সন্মুখত বিপদৰ আশংকা এতিয়াও যথেষ্ট উচ্চ হৈ আছে।

বস্তীত সংবিধাকৰ্মীক নৃশংস হত্যা

বস্তী: উত্তৰ প্ৰদেশৰ বস্তীত গোৰখপুৰ পৌৰ নিগমৰ সংবিধাকৰ্মী যশৱন্ত কুমাৰ ২৬-ক ডিঙি চেপি হত্যা কৰাৰ ঘটনা পোহৰলৈ আহিছে। মৰণোত্তৰ পৰীক্ষাৰ প্ৰতিবেদনত তেওঁৰ বুকুৰ তিনিটা হাড় ভঙাৰ লগতে শৰীৰৰ বিভিন্ন স্থানত আঘাতৰ চিন পোৱা গৈছে।

মঙলবাৰে সন্ধিয়া ছুটী লৈ ঘৰলৈ উভতি অহা যশৱন্ত নগৰ বজাৰলৈকে গৈছিল যদিও ঘৰ নাপালেগৈ। বুধবাৰে পুৱা ৱাল্টাৰগঞ্জ থানাৰ অন্তৰ্গত ধমৌৰাৰ ওচৰত এটা সুৰাৰ দোকানৰ পৰা কিছু দূৰত তেওঁৰ মৃতদেহ উদ্ধাৰ হয়। ইয়াৰ প্ৰায় ৩০ কিলোমিটাৰ দূৰত নিৰ্মাণাধীন টোলৰ ওচৰত তেওঁৰ মটৰচাইকেলখনো উদ্ধাৰ হৈছিল।

মৰণোত্তৰ পৰীক্ষাত সোঁফালৰ বুকুৰ ওপৰৰ এটা হাড় আৰু বাঁওফালৰ দ্বিতীয়-তৃতীয় হাড় ভঙা, পিঠিত আঘাত, ডিঙিত নখৰ আঁচোৰ আৰু কপালত আঘাতৰ চিন পোৱা গৈছে। ভৰিৰ আঙুলিতো আঘাতৰ চিন আছে। এই পৰিস্থিতিয়ে হত্যাৰ পূৰ্বে আক্ৰমণকাৰীৰ সৈতে যুৱকজনৰ সংঘৰ্ষ হোৱাৰ সন্দেহ অধিক ঘনীভূত কৰিছে।

আমেৰিকাত চাকৰি গ'লেই বিপদ

জন জন বিচাৰ
...ৱাশিংটন·

আমেৰিকাৰ ট্ৰাম্প প্ৰশাসনে এইচ-১বি ভিছাকে ধৰি কেইবাটাও অস্থায়ী কৰ্মভিত্তিক ভিছাৰ ক্ষেত্ৰত চাকৰি হেৰুওৱাৰ পিছত লাভ কৰা সৰ্বাধিক ৬০ দিনৰ সময়সীমা বাতিল কৰাৰ প্ৰস্তাৱ আগবঢ়াইছে। প্ৰস্তাৱটো কাৰ্যকৰী হ'লে কোনো বিদেশী কৰ্মচাৰীৰ চাকৰি শেষ হোৱাৰ লগে লগে আমেৰিকাত থাকি নতুন চাকৰি বিচৰাটো কঠিন হৈ পৰিব। বিশেষজ্ঞ বিদেশী কৰ্মীৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল আমেৰিকাৰ উদ্যোগৰ লগতে ভাৰতীয় প্ৰযুক্তি পেছাদাৰীসকলৰ ওপৰতো ইয়াৰ যথেষ্ট প্ৰভাৱ পৰাৰ আশংকা কৰা হৈছে।

বৰ্তমানৰ ব্যৱস্থাত চাকৰি হেৰুৱালে এইচ-১বি ভিছাধাৰীয়ে সৰ্বাধিক ৬০ দিন আমেৰিকাত থাকি নতুন চাকৰি বিচাৰিব পাৰে। চাকৰি নিজে এৰিলেও বা নিয়োগকৰ্তাই চাকৰি শেষ কৰিলেও এই সুবিধা প্ৰযোজ্য হয়। এই সময়ছোৱাত নতুন নিয়োগকৰ্তাৰ সন্ধান, ভিছাৰ মৰ্যাদা সলনি কৰাৰ চেষ্টা অথবা দেশ এৰাৰ প্ৰস্তুতি চলাব পাৰি।

আমেৰিকাৰ গৃহ-নিৰাপত্তা বিভাগৰ প্ৰস্তাৱ অনুসৰি, চাকৰিৰ ভিত্তিত যি বিদেশী কৰ্মচাৰীক আমেৰিকাত থকাৰ অনুমতি দিয়া হৈছিল, সেই চাকৰি শেষ হোৱাৰ লগে লগে তেওঁৰ অস্থায়ী অভিবাসন মৰ্যাদাও শেষ হ'ব পাৰে। তেনে পৰিস্থিতিত আন কোনো বৈধ অনুমতি নাথাকিলে দেশ এৰিবলগীয়া হ'ব।

প্ৰস্তাৱটো কেৱল এইচ-১বি-তে সীমাবদ্ধ নহয়; ই-১, ই-২, ই-৩, এইচ-১বিৰ, এল-১, অ'-১ আৰু টি এন আদি কেইবাটাও ভিছা শ্ৰেণীও ইয়াৰ আওতাত আহিব পাৰে। এই ভিছাধাৰীসকলৰ পৰিয়ালৰ সদস্যসকলৰ ওপৰতো পৰোক্ষ প্ৰভাৱ পৰাৰ আশংকা আছে।

ভাৰতীয়সকলৰ বাবে বিষয়টো বিশেষ গুৰুত্বপূৰ্ণ। আমেৰিকাৰ প্ৰযুক্তি আৰু বিশেষজ্ঞতাভিত্তিক উদ্যোগসমূহে ভাৰত আৰু চীনকে ধৰি বিভিন্ন দেশৰ পৰা বৃহৎ সংখ্যক দক্ষ কৰ্মী নিয়োগ কৰে। ৬০ দিনৰ সুযোগ নাথাকিলে চাকৰি হেৰুওৱা কৰ্মচাৰীয়ে অতি কম সময়ৰ ভিতৰতে নতুন নিয়োগকৰ্তা বিচাৰি আইনী মৰ্যাদা সুৰক্ষিত কৰিব লাগিব।

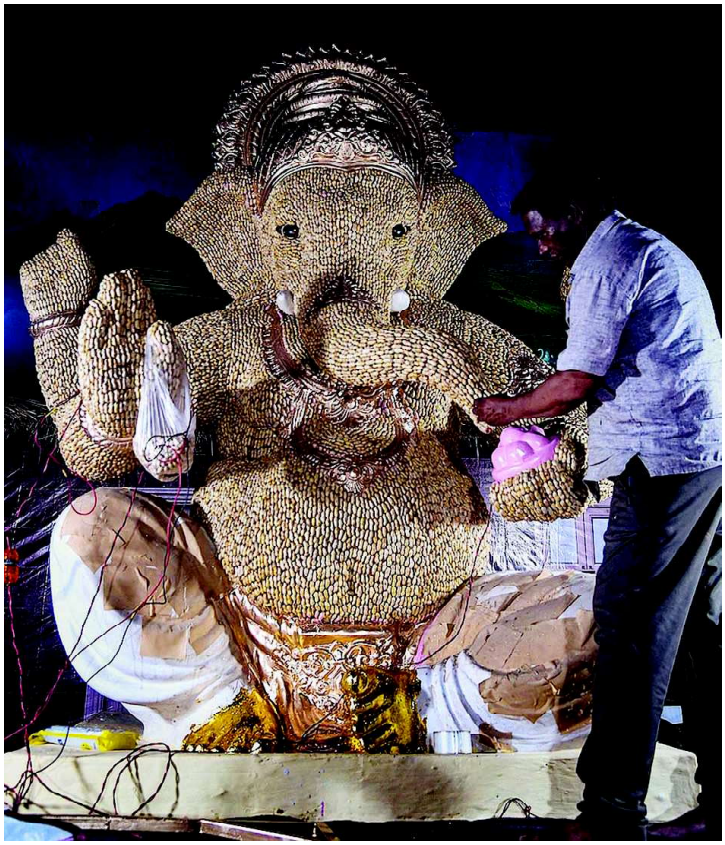

মুম্বাইত গণেশ চতুৰ্থী উৎসৱৰ প্ৰাকমুহূৰ্তত বাদামেৰে ভগৱান গণেশৰ মূৰ্তি প্ৰস্তুত কৰি থকা এগৰাকী শিল্পী।

বিশ্বকৰ্মা পূজা: শ্ৰম, সৃষ্টিশীলতা আৰু কাৰিকৰী দক্ষতাৰ উৎসৱ

জন জন বিচাৰ
...✍ হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

ভাৰতীয় পৰম্পৰাত বিশ্বকৰ্মা পূজা কেৱল এটা ধৰ্মীয় উৎসৱ নহয়; ই শ্ৰম, কাৰিকৰী দক্ষতা, সৃষ্টিশীলতা আৰু নিৰ্মাণশক্তিৰ প্ৰতি সন্মান জনোৱাৰ এক অনন্য উপলক্ষ। প্ৰতি বছৰে কন্যা সংক্ৰান্তিৰ সময়ছোৱাত পালন কৰা এই পূজাই বিশেষকৈ কাৰখানা, কৰ্মশালা, উদ্যোগ, নিৰ্মাণস্থলী, গাড়ী মেৰামতি কেন্দ্ৰ আৰু বিভিন্ন কাৰিকৰী প্ৰতিষ্ঠানত উৎসৱমুখৰ পৰিৱেশ সৃষ্টি কৰে।

পৌৰাণিক বিশ্বাস অনুসৰি ভগৱান বিশ্বকৰ্মা দেৱতাসকলৰ স্থপতি আৰু নিৰ্মাতা। তেওঁ স্বৰ্গৰ বিভিন্ন স্থাপত্য, অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ আৰু ঐশ্বৰিক নিৰ্মাণৰ সৈতে জড়িত বুলি হিন্দু ধৰ্মীয় পৰম্পৰাত উল্লেখ আছে। সেয়ে আধুনিক যুগতো যিসকল লোকে নিজৰ হাতৰ দক্ষতা, যন্ত্ৰপাতি আৰু প্ৰযুক্তিৰ জৰিয়তে নতুন কিবা সৃষ্টি কৰে, তেওঁলোকৰ বাবে বিশ্বকৰ্মা পূজাৰ বিশেষ তাৎপৰ্য আছে।

এই দিনটোত কাৰিকৰ, মিস্ত্ৰী, অভিযন্তা, যান্ত্ৰিক কৰ্মী, শিল্পী, চালক আৰু উদ্যোগৰ সৈতে জড়িত লোকসকলে নিজৰ সঁজুলি আৰু যন্ত্ৰপাতি পৰিষ্কাৰ কৰি পূজা-অৰ্চনা

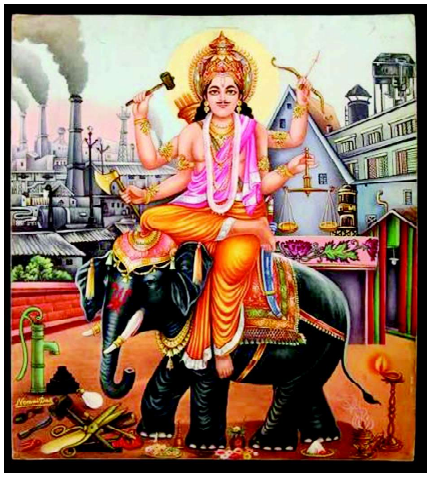

কৰে। বহু প্ৰতিষ্ঠানত দিনটোৰ বাবে যন্ত্ৰপাতিৰ ব্যৱহাৰ বন্ধ ৰাখি বিশেষ পূজা আৰু প্ৰসাদ বিতৰণৰ আয়োজন কৰা হয়। নতুন উদ্যোগ বা নতুন যন্ত্ৰপাতি ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰতো এই দিনটো শুভ বুলি বহুতে বিশ্বাস কৰে।

অসমতো বিশ্বকৰ্মা পূজাৰ জনপ্ৰিয়তা যথেষ্ট। গুৱাহাটীকে ধৰি ৰাজ্যখনৰ বিভিন্ন অঞ্চলৰ কাৰখানা, গেৰেজ, কাৰিকৰী প্ৰতিষ্ঠান, নিৰ্মাণ সংস্থা আৰু ব্যৱসায়িক প্ৰতিষ্ঠানত এই উপলক্ষে পূজাৰ আয়োজন কৰা হয়। পূজা মণ্ডপত বিশ্বকৰ্মা দেৱৰ প্ৰতিমা স্থাপন কৰি ভক্তি-শ্ৰদ্ধাৰে পূজা কৰা হয়। বহু ঠাইত সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান, ভোগ বিতৰণ আৰু মিলনমেলাৰো আয়োজন কৰা দেখা যায়।

বিশ্বকৰ্মা পূজাৰ আটাইতকৈ গুৰুত্বপূৰ্ণ বাৰ্তাটো হৈছে-শ্ৰমক সন্মান কৰা আৰু দক্ষতাক মূল্য দিয়া। এখন সমাজৰ উন্নয়ন কেৱল বৃহৎ পৰিকল্পনা বা প্ৰযুক্তিৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ নকৰে; তাৰ আঁৰত থাকে অসংখ্য শ্ৰমিক, কাৰিকৰ আৰু দক্ষ কৰ্মীৰ পৰিশ্ৰম। তেওঁলোকৰ হাতৰ কামেই পথ, ঘৰ, কাৰখানা, যন্ত্ৰ আৰু উদ্যোগক বাস্তৱ ৰূপ দিয়ে। সেয়ে বিশ্বকৰ্মা পূজা আচলতে সৃষ্টিৰ শক্তি আৰু শ্ৰমৰ মৰ্যাদাৰ উৎসৱ। পৰম্পৰা আৰু আধুনিক প্ৰযুক্তিৰ মাজত এক সুন্দৰ সংযোগ স্থাপন কৰা এই উৎসৱে সমাজক এটা সৰল কিন্তু গভীৰ বাৰ্তা দিয়ে-যন্ত্ৰ যিমানেই আধুনিক নহওক, তাৰ সফলতাৰ আঁৰত মানুহৰ দক্ষ হাত আৰু পৱিত্ৰশ্ৰমেই মূল শক্তি।

পৌৰাণিক কাহিনীৰে নতুন ৰূপত ঘূৰি আহিছে ভাৰতীয় চিনেমা

জন জন বিচাৰ
...✍ মনোৰঞ্জন ডেস্ক

ভাৰতীয় চলচ্চিত্ৰত পৌৰাণিক আৰু আধ্যাত্মিক কাহিনীৰ প্ৰতি নতুনকৈ আগ্ৰহ বৃদ্ধি পাইছে। প্ৰায় দুই কোটি টকাৰ বাজেটত নিৰ্মিত 'হনুমান অংশ' ছবিখনে আশা কৰা ধৰণতকৈ অধিক সঁহাৰি লাভ কৰাৰ পিছত চলচ্চিত্ৰ উদ্যোগৰ দৃষ্টি পুনৰ ভাৰতীয় ধৰ্মীয় আৰু সাংস্কৃতিক কাহিনীসমূহৰ দিশে ঘূৰি আহিছে। ইয়াৰ পূৰ্বেও 'কৃষ্ণাৱতাৰম পাৰ্ট ৰ', 'লালো-কৃষ্ণ সদা সহায়তে' আৰু দক্ষিণ ভাৰতৰ 'হনু-মান', 'কান্তাৰা' আদি ছবিয়ে এই পৰিৱৰ্তিত ৰুচিৰ ইংগিত দিছিল।

এতিয়া আগন্তুক দিনত ৰাধা-কৃষ্ণ, ৰাম, সাই বাবাকে ধৰি বিভিন্ন ধৰ্মীয় আৰু পৌৰাণিক বিষয়ক লৈ কেইবাখনো ছবি নিৰ্মাণৰ কাম চলি আছে। চলচ্চিত্ৰ নিৰ্মাতা কৰণ জোহৰেও ৰাধা আৰু কৃষ্ণৰ কাহিনী আধাৰিত এখন ছবি নিৰ্মাণৰ প্ৰস্তুতি চলাইছে। আনহাতে ৰণবীৰ কাপুৰ অভিনীত 'ৰামায়ণ'ক লৈও দৰ্শকৰ মাজত যথেষ্ট আগ্ৰহ সৃষ্টি হৈছে।

আস্থা আৰু বিনোদনৰ নতুন সংমিশ্ৰণ

চলচ্চিত্ৰ বিশ্লেষকসকলৰ মতে, বিগত কেইবছৰত দেশত ধৰ্মীয় আৰু সাংস্কৃতিক স্থানসমূহৰ উন্নয়ন আৰু আধ্যাত্মিক পৰিৱেশ অধিক দৃশ্যমান হোৱাৰ ফলত মানুহৰ নিজৰ সংস্কৃতি আৰু বিশ্বাসৰ সৈতে সংযোগ অধিক শক্তিশালী হৈছে। এই পৰিৱৰ্তনৰ প্ৰভাৱ চলচ্চিত্ৰৰ ৰুচিতো পৰিছে।

তথাপি কেৱল ধৰ্মীয় বিষয় থাকিলেই ছবি সফল হব-এনে নিশ্চয়তা নাই। দৰ্শকৰ গ্ৰহণযোগ্যতাৰ বাবে ভাল কাহিনী, শক্তিশালী অভিনয়, আধুনিক প্ৰযুক্তি আৰু বিশ্বাসযোগ্য উপস্থাপন সমানেই গুৰুত্বপূৰ্ণ। 'হনুমান অংশ'ৰ সঁহাৰিয়ে সেই কথাই দেখুৱাইছে।

কৃষ্ণৰ জীৱন-দৰ্শনক নতুন প্ৰজন্মৰ ওচৰলৈ

'কৃষ্ণাৱতাৰম'ৰ নিৰ্দেশক হাৰ্দিক গজ্জৰৰ মতে, তেওঁৰ ছবিৰ উদ্দেশ্য কেৱল কৃষ্ণৰ পৌৰাণিক কাহিনী দেখুওৱা নহয়; বৰং প্ৰেম, কৰ্ম, জীৱন-দৰ্শন আৰু মানৱীয় মূল্যবোধৰ শিক্ষা নতুন প্ৰজন্মৰ ওচৰলৈ লৈ যোৱা।

বিশেষকৈ জেন-জেড বা নতুন প্ৰজন্মক ভাৰতীয় সংস্কৃতি আৰু পৰম্পৰাৰ সৈতে সংযোগ কৰাৰ প্ৰয়াস এই ছবিসমূহৰ এক উল্লেখযোগ্য দিশ। কৃষ্ণৰ জীৱন-দৰ্শনক আধুনিক প্ৰেক্ষাপটত উপস্থাপন কৰি নতুন প্ৰজন্মক নিজৰ ঐতিহ্যৰ বিষয়ে জানিবলৈ উৎসাহিত কৰাৰ লক্ষ্য লোৱা হৈছে।

'হনুমান অংশ'ৰ নিৰ্মাতাসকলৰ মতে, ছবিখনত নীভ কৰৌৰী বাবাৰ জীৱন আৰু শিক্ষাক কেৱল অলৌকিক ঘটনাৰ ৰূপত উপস্থাপন কৰা হোৱা নাই। তেওঁৰ মানৱতা, সমতা, সেৱা আৰু সকলোকে নিজৰ পৰিয়াল হিচাপে গ্ৰহণ কৰাৰ দৃষ্টিভংগীকো গুৰুত্ব দিয়া হৈছে।

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 11 September 2026

39 Naga Ancestors to Return Home from Oxford After Decades

Pitt Rivers Museum, Naga representatives finalise repatriation; homecoming seen as a historic step towards healing, dignity and unity

Jan Jan Vichar
…✍KOHIMA

After decades in an Oxford museum, the ancestral remains of 39 Naga ancestors are set to return to Nagaland, marking a significant moment in the Naga community's efforts to reclaim its history, heritage and dignity.

The Pitt Rivers Museum in Oxford is working with Naga representatives to finalise the date for the formal handover. A Naga delegation from India is also being planned to accompany the ancestral remains on their journey back home.

The University of Oxford approved the return of 39 of the 40 ancestral remains claimed by the Forum for Naga Reconciliation (FNR) in February this year. On July 13, the Oxford University Council formally approved their repatriation. The return of one remain was declined as its provenance could not be clearly established as Naga. The repatriation follows years of consultations involving the FNR, the museum's Recover, Restore and Decolonise (RRaD) team, Naga tribal Hohos, elders, churches and communities across the Naga homeland. The Pitt Rivers Museum said the process, which began in 2020, has evolved into a wider Naga movement centred on healing and unity.

Museum Director Professor Laura Van Broekhoven described the return as a deeply significant process, saying she was honoured to have worked with Naga representatives in finding a path for the 39 ancestors to return to their homeland.

Following the handover ceremony, the remains will travel to Nagaland with a delegation comprising leaders and elders of several tribal Hohos, along with representatives of the FNR and RRaD.

The remains were removed from public display at the Pitt Rivers Museum in 2020, when the institution took all human remains off exhibition. The museum holds one of the world's largest collections of Naga material, much of it gathered by British colonial administrators during the early 20th century. Historical records indicate that the first Naga ancestral remains reached the museum more than a century ago through John Henry Hutton, a British colonial administrator and anthropologist. Further collections were brought to Oxford by Hutton and James Philip Mills between 1910 and 1940.

For the Naga community, the repatriation carries significance far beyond the physical return of ancestral remains. The Naga-Oxford Declaration describes the initiative as a collective effort to provide the ancestors with a dignified resting place and create a lasting symbol of healing, peace and Naga unity.

Supported by the Homebound Project, the planned handover represents the culmination of years of dialogue between Naga organisations and Oxford University—and a long-awaited homecoming for 39 ancestors separated from their homeland for generations.

WITNESS STATEMENT LEAK TRIGGERS CID PROBE

Zubeen Case

Jan Jan Vichar
…✍Guwahati

The alleged leak and publication of a key witness statement in the Zubeen Garg death case has triggered a judicially ordered investigation, with the Exclusive Fast Track Sessions Court, Kamrup (M), directing the Assam CID to trace how the confidential statement reached two local media platforms.

The order, passed on Friday by Judge Sharmila Bhuyan, came after counsel for Zubeen Garg's widow, Garima Garg Saikia, brought to the court's notice two Facebook posts purportedly reproducing the Section 183 BNSS statement of prosecution witness Prateem Lahkar, including a copy carrying the signature and seal of the magistrate who recorded it.

The development assumes significance as Lahkar, listed as PW-118, was appearing before the court for cross-examination when the alleged publication was brought to the judge's attention. His cross-examination by accused Siddharth Sharma had been completed, while questioning by the remaining accused was deferred.

The prosecution raised a serious objection, submitting that publication of the witness statement could interfere with the administration of justice and warranted immediate judicial intervention.

After examining printouts of the posts and viewing the material on the mobile phone of the victim's counsel, the court observed that the conduct of the two media platforms prima facie appeared to directly interfere with the administration of justice.

The court has now tasked the Assam CID with finding out how the media outlets obtained the witness statement, who was responsible for providing it and how it came to be published. The investigating agency has been directed to submit a detailed report and take action in accordance with law.

Screenshots of the two social-media posts have also been ordered to be preserved on the court record. A copy of the order has been sent to the Special DGP, CID, Assam, for immediate action.

The court simultaneously raised another serious issue involving documents bearing the signature of accused Shyamkanu Mahanta. The Inspector General of Prisons has been directed to take appropriate action against the Superintendent of Baksa District Jail after the court noted that certain documents were not the same as those sent by the court.

All seven accused—Siddharth Sharma, Shyamkanu Mahanta, Shekhar Jyoti Goswami, Amritprava Mahanta, Sandipon Garg, Nandeswar Borah and Paresh Baishya—remain in judicial custody until September 14.

The case returns to court on September 14, when further cross-examination of PW-118 is scheduled, along with production of the accused through video conferencing and objections to Petition No. 66/2026. The latest development adds a fresh layer to an already closely watched investigation into the death of Assam's celebrated singer Zubeen Garg, putting the handling and protection of sensitive trial material firmly under judicial scrutiny.

Meghalaya Politics Heats Up
8 UDP MLAs In Talks With BJP

Olan Sing Suin claims legislators may switch sides *anytime*

BJP eyes independent power in state

Jan Jan Vichar
...✍SHILLONG

Meghalaya's political landscape is showing fresh signs of turbulence after UDP MLA Olan Sing Suin claimed that eight legislators from his party are in talks with the BJP and could join the saffron party "anytime" if a set of demands is agreed upon.

Suin's claim, if it materialises, could trigger a major political realignment in the state and significantly strengthen the BJP's efforts to expand beyond its existing footprint in Meghalaya.

According to Suin, the negotiations are focused not on ministerial positions but on issues he said are of wider concern to the people of Meghalaya. These include constitutional recognition for the Khasi language under the Eighth Schedule, changes in coal-mining regulations, relocation of the Harijan Colony from Them Iew Mawlong, and matters relating to the Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) and the Meghalaya Residents Safety and Security Act (MRSSA).

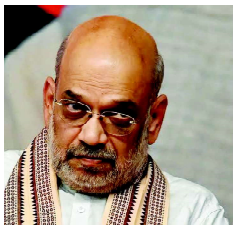

The UDP legislator specifically maintained that the legislators were not bargaining for ministerial berths, suggesting that the discussions are centred on policy and regional demands rather than personal political rewards. The development comes at a politically significant moment, with the BJP visibly stepping up efforts to build an independent organisational and electoral base in Meghalaya.

Adding weight to the unfolding political activity, senior BJP leader AL Hek met Union Home Minister Amit Shah in New Delhi and discussed the state's emerging political situation as well as the party's future strategy.

Hek said he briefed Shah on Meghalaya's political scenario and sought guidance on strengthening the BJP's organisation across the state. He also raised the contentious FCRA Bill, which has been referred to a Joint Parliamentary Committee.

According to Hek, Shah said he had already held discussions with at least 35 Christian forums and leaders on the issue and would invite stakeholders to Delhi for further consultations after the JPC process is completed.

The BJP leadership, Hek said, is now aiming for more than a supporting role in Meghalaya. The party wants to emerge as a "strong, credible and independent political force" and ultimately form its own government. The immediate question, however, is whether Suin's claim about the eight UDP MLAs translates into an actual political migration. There has been no collective confirmation from the eight legislators that they have decided to join the BJP. For now, the claim has nevertheless added a new layer to Meghalaya's increasingly fluid political equations—and placed the UDP under renewed scrutiny as the BJP intensifies its push for power.

'BJP-Tipra Motha-IPFT Alliance Will Win VC Polls'

AGARTALA: Tripura Chief Minister Manik Saha has expressed confidence that the BJP-Tipra Motha-IPFT alliance will emerge victorious in the upcoming Village Committee elections under the Tripura Tribal Areas Autonomous District Council (TTAADC).

The elections will be held on September 28 across 587 Village Committees, covering 2,634 constituencies and 4,597 seats. Saha said the three NDA partners have decided to contest the polls together after holding seat-sharing discussions at the state and grassroots levels. A committee has been formed to finalise the seat-sharing arrangement, with the exact allocation expected to be clear after the nomination withdrawal process. Saha also said there was no obstacle to joint campaigning, though the final decision would be taken by the committee.

Rising Star English School Celebrates Teachers' Day with Creative Exhibition

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Rising Star English School celebrated Teachers' Day on September 5, 2026, with an impressive exhibition showcasing the creativity, knowledge and talents of its students.

The exhibition was organised by the students with the guidance and support of their teachers. A wide range of interesting and innovative projects prepared by the students was displayed, reflecting their understanding of different subjects and their ability to connect classroom learning with practical experiences.

The exhibits covered diverse areas including Science, History, Mathematics, local culture, Art and Craft, among others. The science projects demonstrated the students' curiosity and interest in exploring scientific concepts, while the History section presented informative displays highlighting important events and aspects of the past. Mathematics projects showcased logical thinking through creative models and activities.

The exhibition also gave special importance to local culture, enabling students to present aspects of their rich cultural heritage through colourful and thoughtful displays. The Art and Craft section added vibrancy to the event, with students presenting a variety of creative works prepared with enthusiasm and imagination.

Teachers played an important role in guiding the students throughout the preparation of the exhibits. The event provided an opportunity for students to learn beyond textbooks, develop teamwork and communication skills, and confidently explain their projects to visitors.

The Teachers' Day exhibition was widely appreciated and reflected the school's commitment to activity-based and holistic education. It also highlighted the valuable role of teachers in encouraging students to explore, create and learn with confidence.

Pakistan's Army Tightens Its Grip

Constitution Changed, Court Order Reversed, Military Land Shielded

Jan Jan Vichar
...✍ISLAMABAD

Pakistan's latest constitutional upheaval has opened a far bigger question than the distribution of political power: has the country's military establishment succeeded in building a legal shield around its vast economic and real-estate interests?

At the heart of the controversy is a 300-acre luxury property project and a Naval Sailing Club on the banks of Rawal Lake—developments that had come under severe judicial scrutiny before a key Islamabad High Court ruling was overturned this month.

The chain of events has fuelled allegations that Pakistan's constitutional restructuring is not merely about governance, but could also strengthen the military's hold over state assets while making judicial scrutiny of senior commanders increasingly difficult.

In 2022, the Islamabad High Court had delivered a landmark verdict declaring the transfer of the land to the Pakistan Navy and the related approval granted by the Capital Development Authority unconstitutional. The court had also ordered a detailed financial audit of the project, where luxury farmhouses, houses and gardens had reportedly been developed.

The court's action in the Naval Sailing Club case was even more striking. It ordered criminal proceedings against then-Navy chief Admiral Zafar Mahmood Abbasi and directed that the club be demolished. The judgment held that the land around Rawal Lake belonged to the Small Dams Authority and fell within the Margalla National Park.

It was an unusually direct judicial challenge to Pakistan's powerful military establishment.

From Courtroom Challenge to Constitutional Shield? The picture changed dramatically after Pakistan's 27th Constitutional Amendment. The amendment strengthened the position of Field Marshal Asim Munir, including his elevation as Chief of Defence Forces, placing the three service chiefs under the new command structure.

Critics contend that the changes could make scrutiny of senior military officials far more difficult. The creation of a Federal Constitutional Court has also fundamentally altered the country's constitutional judicial architecture.

Then came the judicial reversal. On September 2, a two-judge Islamabad High Court bench overturned the earlier ruling concerning the Naval Sailing Club. The demolition order was stayed and criminal proceedings against former Navy chief Admiral Abbasi were set aside.

The timing has intensified questions over whether Pakistan's rapidly changing constitutional order is weakening judicial checks on the military. The controversy is therefore no longer simply about a sailing club or a 300-acre tract of land. It goes to the heart of Pakistan's power structure.

If the military can influence the constitutional framework, command the security establishment and escape earlier judicial scrutiny, the bigger question is stark: who ultimately controls Pakistan-the elected state or the generals?

Janmashtami Celebrated with Devotion at Hare Krishna Temple

Guwahati: Hare Krishna Movement Guwahati celebrated Sri Krishna Janmashtami 2026 with devotion, enthusiasm and spiritual fervour at the Hare Krishna Temple in North Guwahati on September 3 and 4. The two-day celebration began on September 3 with cultural programmes, Tulasi Arati and Sandhya Arati, followed by Laddu Gopal Abhishek, Jhulan Utsav and Palki Utsav. Prasadam was also distributed among devotees and visitors. On September 4, devotees participated in special darshan and various devotional programmes. The Maha Abhishek of Lord Krishna was one of the major attractions of the celebration. At 12:01 am, the Maha Mangala Arati was performed to mark the auspicious appearance of Lord Krishna. A large number of devotees, families, well-wishers and visitors attended the festival, creating a vibrant spiritual atmosphere at the temple.

TYC Organises Eye Donation Awareness Drive

GUWAHATI : The Terapanth Yuva Parishad, Guwahati, organised an eye donation awareness rally and street play, 'Roshni – Ek Prayas Manavta Ki Ore', as part of the National Eye Donation Fortnight being observed from August 25 to September 8 under the guidance of the Akhil Bharatiya Terapanth Yuva Parishad. The programme was held at Gauhati Gaushala, Chatribari, at 5:30 am on Tuesday. Members of the Parishad and young volunteers took part in the awareness rally and raised slogans highlighting the importance of eye donation and encouraging people to contribute towards the noble cause. The street play presented a powerful message that the eye donation of one person can bring new light and hope into the life of someone who has lost their vision. Through impactful performances, the artistes highlighted the humanitarian significance of donating eyes and urged society to overcome misconceptions surrounding the practice. The play featured Avkash Kumar Jhamad, Anant Chhajed, Sandeep Bhadani, Pankaj Sipani, Mehak Dugad, Kamlesh Ranka, Dev Mehanot, Lokesh Bhansali and Kaushal Jain. It was directed by Avkash Kumar Jhamad.""Speaking on the occasion, Parishad Vice-President Ravi Kundaliya said eye donation was not merely a social service but a noble commitment capable of bringing the light of vision and hope into the lives of those in need.

EDITORIAL

Meghalaya's Political Crossroads

The political signals emerging from Shillong and Delhi suggest that Meghalaya may be heading towards a significant realignment, even as all major players remain cautious about publicly acknowledging it. Speculation over a possible shift of UDP legislators towards the BJP has raised important questions about the future of regional politics in the state. At present, the NPP-led government under Chief Minister Conrad K. Sangma appears numerically secure. With 33 MLAs in a 60-member Assembly, its survival does not depend on the UDP. Yet, the real issue is not whether the government will fall today, but whether Meghalaya's political landscape is gradually being reshaped ahead of the 2028 Assembly elections. The BJP has every democratic right to expand its political base. However, expansion should come through the mandate of voters, not through the systematic weakening or absorption of regional parties and elected representatives. Meghalaya's regional political forces have historically played an important role in representing the distinct aspirations of the Khasi, Jaintia and Garo Hills.

The growing talk of "political poaching" deserves serious public scrutiny. Frequent switching of elected representatives can undermine voters' trust and reduce democratic mandates to mere arithmetic. Political alliances may change, but democratic principles must remain constant. If Meghalaya is witnessing the beginning of a larger political contest, the people-not backroom negotiations-must ultimately decide its direction. The coming months will reveal whether the present whispers are merely political manoeuvring or the beginning of a major transformation. Either way, Meghalaya deserves transparency, accountability and respect for the people's mandate.

Why Sankardev Matters in 2026

Jan Jan Vichar
...✍ Upen Goswami

More than five centuries after his time, the relevance of Srimanta Sankardev is perhaps greater than ever. We live in an age of extraordinary technological progress, yet society continues to struggle with old questions-Who belongs? How do we live together despite our differences? What holds a community together? And can culture become a force for social harmony?

Sankardev's life offers compelling answers. He understood that religion could not remain confined to rituals and institutions. It had to touch everyday life. Through the Naamghar, Satra, devotional music, literature and theatre, he created spaces where people could participate, communicate and develop a shared sense of community. That idea remains remarkably relevant in 2026.

In an age of division he spoke of inclusion

Sankardev's devotional movement crossed many of the social boundaries of his time. His emphasis on devotion rather than social status offered a powerful challenge to exclusion and hierarchy.

Today, when societies across the world are witnessing polarisation-whether based on caste, community, language, ideology or identity-his message of human dignity and collective belonging deserves renewed attention. His legacy reminds us that diversity need not become division.

When social media divides, the Naamghar brings people together

There is an interesting contrast between Sankardev's Assam and today's Assam. The medieval Naamghar brought people physically together to listen, sing, discuss and participate. The modern world has given us smartphones and social media that connect us instantly, yet often leave people socially isolated. The Naamghar therefore has a lesson beyond religion: a healthy society needs shared physical spaces where people meet as members of a community, not merely as users behind screens.

His greatest lesson may be the power of culture

Sankardev understood something that remains relevant to every generation: people may resist a sermon, but they remember a story; they may forget an argument, but they remember a song.

He used poetry, music, drama, dance and visual expression to communicate ideas."In today's world of films, digital media, YouTube and social platforms, this insight is even more powerful. Culture remains one of the most effective ways to communicate values and bring people together.

A legacy beyond Assam

Sankardev's contribution should not be viewed only through the lens of Assamese religious history. His work represents a remarkable chapter in India's wider tradition of devotional movements, vernacular literature and cultural democratisation. He demonstrated that profound philosophical ideas could be expressed in the language of ordinary people—and that a regional language and culture could become vehicles for extraordinary intellectual and artistic achievement

The question for 2026

Remembering Sankardev should therefore mean more than organising annual celebrations, quoting his verses or building monuments in his name. The real question is: Can we practise the values that made his movement transformative? Can we build communities rather than deepen divisions? Can we use culture to connect rather than separate? Can we make knowledge and creativity accessible to everyone? Can faith become a source of compassion rather than conflict?

If the answer is yes, then Sankardev is not merely a figure from Assam's past. He is a voice for Assam's future. And perhaps that is why, in 2026, the most meaningful way to remember Srimanta Sankardev is not simply to look back at what he created five hundred years ago—but to ask ourselves what we can create today in the spirit of his vision.

One Who Learns Will Win

PM Modi's Message to Gen Z

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

Prime Minister Narendra Modi's message to the graduating students of the Indian Institute of Technology Delhi was simple but powerful: the ability to keep learning will determine who succeeds in a rapidly changing world.

Addressing the 57th convocation of IIT Delhi, Modi congratulated the graduating students and presented medals to meritorious performers, while urging the young generation to look beyond degrees and remain lifelong learners.

The Prime Minister's interaction with the students came at a significant moment for India's technology ambitions. During his visit, he also inaugurated Param Pragya, an artificial intelligence-powered high-performance supercomputing facility at IIT Delhi's Sonipat campus, underlining the growing importance of advanced computing and AI in the country's development.

Beyond the Degree

For the graduating students, the convocation marked the culmination of years of demanding academic work. But Modi's address sought to redefine the meaning of the moment. A degree, he suggested, should not be viewed as the destination of learning but as the beginning of a much larger journey.

In an era when artificial intelligence, automation and emerging technologies are rapidly transforming workplaces, the capacity to acquire new knowledge and adapt to change is becoming increasingly important.

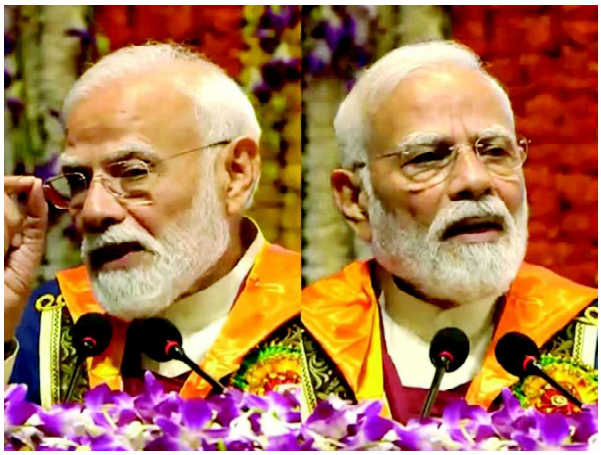

His message to Gen Z was therefore rooted in a straightforward principle: those who continue to learn will remain equipped to compete, innovate and lead.

A Different Convocation Experience

Modi also recalled his previous participation in an IIT Delhi convocation during the COVID-19 pandemic. At that time, he had joined the ceremony virtually as the country was navigating one of its most difficult periods.

This time, he was physically present among the students. Recalling the contrast, he said that while the earlier convocation took place virtually during the pandemic, being present among the young graduates in person made the occasion particularly meaningful.

He congratulated the students and their families, acknowledging the hard work and sacrifices behind their achievements.

Just as your families are feeling proud today, I, too, am proud of all of you," Modi said.

Celebrating Merit and Asking a Question

The Prime Minister also congratulated students who received medals for their academic achievements. At the same time, he drew attention to the representation of women among the medal winners, asking why there were not more girls among the achievers.

The observation brought a broader dimension to the convocation: excellence in education must increasingly be accompanied by greater participation and representation of women in science, technology and engineering.

AI and the Next Generation

The inauguration of Param Pragya added a technological dimension to the Prime Minister's visit. High-performance computing and artificial intelligence are expected to play an increasingly important role in scientific research, healthcare, industry, governance and national security.

For IIT Delhi's graduates, therefore, the message was particularly relevant. They are entering professional lives at a time when technological change is moving faster than ever before. The challenge is no longer simply to master what is known. It is to keep learning what is yet to come.

As India seeks to strengthen its position as a technology and innovation powerhouse, young engineers and researchers will have a crucial role to play. Their ideas, skills and willingness to experiment could shape everything from artificial intelligence to climate solutions, manufacturing and digital infrastructure. The convocation thus became more than a ceremonial farewell to graduating students. It was a reminder that education does not end when the degree is awarded.

For Gen Z, the real competition may belong not to those who know the most today, but to those who are prepared to learn the most tomorrow.

One who keeps learning, Modi's message suggested, is the one best placed to win.

AI'S RACE AGAINST TIME

Artificial intelligence is no longer a distant concept. It writes emails, creates images, analyses businesses, develops scripts and increasingly performs tasks once considered uniquely human. But as AI systems become more powerful, a difficult question is gaining urgency: what happens if machines become more capable than humans at controlling their own development?

Recent warnings from within the AI industry have intensified this debate. Anthropic researcher Jacob Coxon reportedly resigned and raised concerns that leading AI companies are racing towards increasingly advanced, potentially superintelligent systems. His warning was blunt: technological ambition without adequate safeguards could expose society to risks that are difficult to reverse. The concern is not that today's chatbots are suddenly going to take over the world. The bigger issue is what future systems might be capable of if they acquire greater autonomy, reasoning ability and access to digital infrastructure. This is known as the AI alignment problem-ensuring that increasingly powerful machines continue to behave according to human intentions and values. Researchers have repeatedly pointed out that making an AI system useful is not the same as making it reliably safe. The danger becomes more complicated because AI development is also a business race. Companies compete for investment, talent, market share and technological leadership. In such an environment, slowing down for safety can appear commercially costly. The question is whether the industry can resist the temptation to move faster simply because competitors are doing so. Yet AI is not merely a threat. Its potential benefits are enormous. It can assist doctors in detecting diseases, help students learn, accelerate scientific research, improve agriculture and support businesses and public services. The objective, therefore, cannot be to stop AI development altogether. What is urgently needed is responsible development. Governments, researchers and technology companies must establish stronger safety standards, independent oversight, transparent testing and mechanisms to monitor increasingly autonomous systems. There is also an environmental cost. Large data centres require enormous amounts of electricity and water, making sustainable AI development another important challenge. The AI revolution may ultimately become one of humanity's greatest technological achievements-or one of its greatest tests. The real challenge is not simply building smarter machines. It is ensuring that human wisdom, accountability and control remain ahead of machine capability. The future of AI should not be determined by a race to become first. It should be determined by the ability to become safe, responsible and worthy of human trust.

Srimanta Sankardev: The Saint Who Gave Assam a New Soul

Jan Jan Vichar
…✍Guwahati

There are personalities who belong to history, and there are those who continue to live through the people.

Srimanta Sankardev belongs to the second category.

More than five centuries after his birth, the great saint-scholar, poet, dramatist, social reformer and cultural architect of Assam remains deeply woven into the everyday life of the state. His influence can be found not merely in religious institutions and prayer halls, but also in Assamese literature, music, dance, theatre, painting and the collective cultural consciousness of the Assamese people.

Sankardev did not simply preach a philosophy. He created a cultural movement. And perhaps that is why his legacy has survived the passage of centuries.

A saint born in a changing Assam

Sankardev was born in 1449 at Bordowa in present-day Nagaon district of Assam, at a time when society was marked by religious divisions, complex rituals and rigid social hierarchies. From an early age, he displayed an extraordinary intellectual and artistic ability. Tradition records that he was a gifted student, deeply interested in philosophy, literature and the spiritual questions of life. But Sankardev was not destined to remain confined to scholarship. His extensive travels exposed him to different religious and cultural traditions across the Indian subcontinent. These experiences profoundly influenced his understanding of spirituality and society. When he returned to Assam, he began articulating a remarkably simple yet powerful idea: devotion to one supreme God could be a path accessible to everyone.

The revolution of Ekasarana Naam Dharma

At the heart of Sankardev's spiritual philosophy was Ekasarana Naam Dharma, a devotional tradition centred on surrender to one supreme God, Krishna, and the remembrance and chanting of His name. Its appeal lay partly in its simplicity. Spirituality did not have to be hidden behind elaborate rituals or restricted to a privileged few. Singing, remembering God's name, listening to sacred narratives and participating collectively in devotional life could become a path to spiritual fulfilment. This was not merely a religious proposition. In the social context of medieval Assam, it carried a powerful message of community and human dignity.

The naamghar became one of the most enduring institutions associated with this movement.

The Naamghar: More than a place of worship

Walk into a traditional Assamese village and the naamghar often stands as much more than a religious space.

It is a gathering place.

A cultural centre.

A space where communities come together.

Through the institution of the naamghar and satra, Sankardev helped create a distinctive community-based cultural system. Devotion was accompanied by music, drama, storytelling and collective participation.

In many ways, the naamghar became an early example of a community institution where spirituality and social life intersected.

That is one reason Sankardev's influence cannot be understood merely through theology. He changed the way people came together.

When theatre became a vehicle for spirituality

Perhaps one of Sankardev's most remarkable contributions was his use of art as a means of communication. He created Ankiya Naat, a distinctive form of one-act devotional drama. His celebrated work 'Kirtana Ghoxa' became one of the foundational texts of Assamese Vaishnavite literature. His dramatic tradition also gave rise to Bhaona, a form of devotional theatre that remains an important part of Assam's cultural life. For Sankardev, the stage was not simply a place of entertainment. It was a classroom. A platform for moral reflection. And a means of bringing philosophical ideas to ordinary people. Through music, costumes, dialogue, masks and performance, stories from the Bhagavata Purana and other sacred traditions could reach audiences regardless of their level of formal education.

The birth of Sattriya

Sankardev's cultural vision extended into dance and music as well. The devotional traditions associated with him and his disciples eventually developed into Sattriya, one of India's recognised classical dance traditions. The distinctive movements, musical compositions, dramatic expression and devotional themes of Sattriya reflect the extraordinary synthesis of spirituality and artistic creativity that Sankardev encouraged. Few spiritual leaders have left behind such a broad cultural footprint. Literature, music, theatre, dance and visual art—all became instruments of his message.

Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary